Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

जीवन-सूत्र

जो थारे दिल कांय न बेंसें
तो सगलो झगड़ो चूको।
समता आदर नें कजीया छोड़ो,
जिण-तिण आगें म कूको।।

यदि तुम्हारे हृदय में कुछ नहीं बैठता है तो सब झगड़ों को छोड़ो। समता में रहो, कलह को छोड़ो, किसी के सामने रोना मत रोओ।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 48 • 01 सितम्बर - 07 सितम्बर, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 30-08-2025 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

223वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव पर सादर श्रद्धा प्रणति

करी प्राण सिद्धि वरी, इच्छा मृत्यु अटूट।
सिरियारी चर्चित करी, स्वामी च्यारुं कूट।।

श्रद्धाप्रणत अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 सितम्बर - 07 सितम्बर, 2025

संकल्पजा हिंसा से बचने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
25 अगस्त, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता ज्योतिपुंज युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए कहा कि 27 भवों की श्रृंखला में अठारहवें भव में भगवान महावीर राजपरिवार में त्रिपृष्ठ वासुदेव के रूप में जन्मे थे। क्षेत्र में शेर की समस्या के निराकरण हेतु व्यवस्था की गई कि एक-एक राजा उस क्षेत्र में पहरा लगाए ताकि किसानों की सुरक्षा हो सके। इसी क्रम में पोतनपुर राजा प्रजापति की भी बारी आई। राजा प्रजापति जाने के लिए उद्यत हुए तो त्रिपृष्ठ ने पिताजी को जाने हेतु मना किया और आज्ञा लेकर अपने भाई अचल को साथ लेकर उस क्षेत्र की ओर रवाना हो गए।

दोनों भाई शेर की गुफा की ओर गए और जोर से नाद किया। शेर नाद सुनकर क्रोधित हुआ और आक्रामक होकर बाहर आया। निकट आने पर शेर त्रिपृष्ठ की ओर झपटा। त्रिपृष्ठ ने शेर के दोनों जबड़ों को पकड़ कर चीर दिया और शेर का प्राणान्त हो गया। यहां शेर की हिंसा हुई है, परन्तु इसके पीछे मुख्य लक्ष्य था किसानों की सुरक्षा। इसलिए यह कार्य करना पड़ा। इसी प्रकार देश रक्षा के लिए भी सैनिकों को हथियार उठाने पड़ते हैं। हिंसा तीन प्रकार की होती है- 1. आरंभजा, 2. संकल्पजा, 3. प्रतिरोधजा। हमें संकल्पजा हिंसा से बचना चाहिए। आवश्यक हिंसा में भी राग-द्वेष से बचना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने त्रिपृष्ठ के प्रथम वासुदेव एवं अचल के प्रथम बलदेव बनने का वर्णन किया और बताया कि वासुदेव ने इस जन्म में अनेक हिंसक कार्य किए और नियम है कि वासुदेव की अगली गति नरक की होती है। अतः प्रभु महावीर का जीव त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव के बाद सातवीं नरक में जन्म लेकर तैंतीस सागरोपम का उत्कृष्ट आयुष्य भोगता है। सातवीं नरक से निकलकर शेर के रूप में जन्म लिया। इस बीसवें भव का आयुष्य पूर्ण कर, इक्कीसवें भव में चौथी नरक में पैदा होता है। नरक से निकलकर नयसार के जीव ने अनेक छोटे-छोटे भव किए।

तेइसवें भव में मनुष्य के रूप में पश्चिम महाविदेह क्षेत्र की मूका नगरी में राजा धनंजय और रानी धारिणी के पुत्र प्रियमित्र के रूप में जन्म लेते हैं। प्रियमित्र बड़ा हुआ। माता-पिता ने उत्तराधिकार प्रियमित्र को सौंपकर दीक्षित हो गए और प्रियमित्र चक्रवर्ती बन गया। प्रियमित्र भी पोट्टिलाचार्य के पास साधु बन गया। यहां का आयुष्य पूर्ण कर चौबीसवें भव में महाशुक्र नामक पांचवें देवलोक में जन्म हुआ। वहां का आयुष्य संपन्न कर देवलोक से च्युत होकर पच्चीसवें भव में छत्रा नामक नगरी में जन्म हुआ। वहां के महाराज जितशत्रु और महारानी भद्रा के यहां राजकुमार नंदन का जन्म हुआ। पिता जितशत्रु ने नंदन को राज्याधिकार सौंपा और स्वयं साधु बन गए।

राजा बनने के बाद गार्हस्थ जीवन में समय बिताकर नंदन ने पोट्टिलाचार्य के पास संयम ग्रहण कर लिया। राजर्षि नंदन ने एक लाख वर्ष तक साधुत्व पाला। ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। इसके बाद कठोर तप किया और ग्यारह लाख साठ हजार मास खमण किए। तपस्या और अर्हत् भक्ति के परिणाम स्वरूप तीर्थंकर नाम कर्म की प्रकृति का उपार्जन किया। इस भव का आयुष्य संपन्न कर प्रभु की आत्मा प्राणत नामक दसवें देवलोक में उत्पन्न हुई।

इससे पूर्व मुख्य मुनि प्रवर ने दस धर्मों के अंतर्गत तप-त्याग धर्म पर अपनी विवेचना प्रस्तुत करते हुए कहा कि जब तक हमारे भीतर यह अनुभूति नहीं होगी कि आत्मा और शरीर भिन्न हैं तब तक तप और त्याग का कोई विशेष महत्त्व नहीं रह सकता। जो हमारे पूर्वबद्ध कर्मों को क्षय करता है, वह तप है। दूसरी परिभाषा है कि जो भी हमारा शुभ योग है, वह तप है। तप के दोनों प्रकार- बाह्य और आभ्यंतर का अपना-अपना महत्त्व है। इसी प्रकार त्याग का महत्त्व राजा दर्शाण भद्र के कथानक के माध्यम से विवेचित किया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने जप दिवस पर अपनी अभिव्यक्ति देते हुए जप शब्द की व्याख्या की। 'ज' शब्द हमारे जन्म की परंपरा को समाप्त करने वाला और 'प' हमारे पापों का नाश करने वाला होता है। जप के प्रकंपन हमारे शरीर, भावों और वातावरण को प्रभावित करते हैं। मंत्रोच्चारण करते समय उसके अर्थबोध के साथ मंत्र का देखना भी आवश्यक होता है।

मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर) ने भगवान अरिष्टनेमि के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया। साध्वी दीप्तियशाजी व साध्वी रक्षितप्रभाजी ने जप दिवस पर आधारित गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

व्रतों के पालन में रहे दृढ़ता : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
24 अगस्त,, 2025

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के क्रम को आगे बढ़ाते हुए त्रिपृष्ठ के भव तक का वर्णन किया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि एक उम्र के बाद अपने आपको संयम की साधना में नियोजित करना चाहिए।

'व्रत चेतना दिवस' पर प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने कहा कि व्रतों के प्रति हमारी चेतना रहे, पालन करने में दृढ़ता रहे। लिए हुए व्रतों को और अधिक पुष्ट करने का प्रयास रहे। साधु-साध्वियां पचहत्तर वर्ष के पश्चात् अपने आपको स्वाध्याय, जप, खाद्य संयम आदि में नियोजित करें।

मुख्यमुनि प्रवर ने संयम धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि संयम के नहीं होने पर चारों ओर अराजकता, आतंक और भय का माहौल छा जाता है। जैसे एक नदी द्वारा संयम रूपी अपने तटों की मर्यादा तोड़ने पर कई लोगों का अपकार हो सकता है। संयम एक ऐसा सुरक्षा कवच है जो हमें मृत्यु से बचाता है, हमारे जीवन की शक्ति को बढ़ाता है और हमें अपनी आत्मा की ओर जाने की प्रेरणा देता है। जो अपनी आत्मा का साक्षात्कार करना चाहते हैं, उन्हें संयम धर्म का अवलंबन लेना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने व्रत चेतना दिवस पर अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि मनुष्य त्याग के महत्व को जानता है, परंतु उसमें प्रवृत्ति नहीं करता। व्रत के मूल्य को समझता है, फिर भी स्वीकार नहीं करता। अव्रत को जानते हुए भी उसे छोड़ नहीं पाता। इसका कारण है—मोह। इसी के कारण मनुष्य भवभ्रमण कर रहा है। इस भवभ्रमण को सीमित करने के लिए व्रत की चेतना को जगाना होगा।

मुनि प्रिंसकुमारजी ने भगवान मल्लिनाथ के जीवन वृतांत का वर्णन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

बोलने और मौन करने में विवेक रखना है महत्वपूर्ण : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
23 अगस्त, 2025

अहिंसा यात्रा के प्रणेता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के क्रम को आगे बढ़ाते हुए कहा कि मुनि मरीचि साधु संस्था से मुक्त हो गया और किसी मध्यम मार्ग का निश्चय किया तथा तपस्वी साधक का वेश बनाया। उसने गेरुआ कपड़े धारण किए, त्रिदण्ड पास में रखा, छत्र धारण किया। साधक मरीचि ने त्रिदण्ड पास में रखने का कारण बताया कि साधु तो मन, वचन, काया के दण्डों को जीतने वाले होते हैं, पर मैं मन, वचन, काया के दण्डों से पराजित हो गया हूँ। इस बात को द्योतित करने के लिए मैं त्रिदण्ड अपने पास रखूँगा। छत्र इसलिए धारण करूँगा कि मुझ पर अभी मोह का आवरण है। इस वेश के साथ मरीचि ने साधक, तपस्वी का जीवन शुरू कर दिया। स्नान आदि में सीमित जल का प्रयोग करता। साधुओं में मुनिचर्या की सौरभ होती है, परन्तु मुझमें वह नहीं है, इसलिए मैं चन्दन का लेप करूँगा। पैरों में खड़ाऊँ पहनूँगा। लेकिन मुख्य बात यह भी थी कि अब मैं घर भी नहीं लौटूँगा।

एक दिन चक्रवर्ती महाराज भरत ने भगवान ऋषभ से एक प्रश्न पूछा कि, भगवन्, आपके समवसरण में ऐसा कोई जीव है क्या, जो इस अवसर्पिणी में आपकी तरह इस भरत क्षेत्र में तीर्थंकर बनने वाला है? भगवान ऋषभ ने फरमाया कि समवसरण के अन्दर तो नहीं है, परन्तु बाहर बैठा तुम्हारा पुत्र मरीचि इसी अवसर्पिणी में, इसी भरत क्षेत्र में अंतिम तीर्थंकर बनने वाला है। त्रिपृष्ठ रूप में पहला वासुदेव भी बनेगा और महाविदेह की मूका नगरी में प्रियमित्र नाम का चक्रवर्ती भी बनेगा। भरत ने यह संवाद मरीचि को सुनाया तो मरीचि में संभवतः थोड़ा गर्व का भाव उत्पन्न हुआ कि मेरे कुल का क्या कहना? मेरे दादाजी इस अवसर्पिणी के प्रथम तीर्थंकर, मेरे पिताजी प्रथम चक्रवर्ती और मैं इसी अवसर्पिणी का पहला वासुदेव बनूँगा, मूका नगरी में चक्रवर्ती बनूँगा और यहाँ का अंतिम तीर्थंकर बनूँगा। मेरा कुल कितना उत्तम है! किन्तु वास्तव में आदमी को किसी भी चीज का मद नहीं करना चाहिए।

अध्यात्म यात्रा के पश्चात् 'वाणी संयम दिवस' के संदर्भ में प्रेरणा-पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि वाणी का संयम तो अच्छा है ही, परन्तु साथ में वाणी का विवेक होना भी आवश्यक है। मौन करना और बोलना कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है बोलने और मौन करने में विवेक रखना। साधु बहिर्विहार में जाते हैं तो अग्रगण्य को कम से कम आठ प्रहरों में से एक प्रहर, यदि स्वास्थ्य अनुकूल हो, तो प्रवचन में अवश्य जाना चाहिए। जहाँ बोलने की आवश्यकता हो वहाँ बोलना भी साधना है, कर्म-निर्जरा है। इसलिए बोलने और न बोलने में विवेक रखना चाहिए।

मुख्यमुनि श्री ने दस धर्मों में लाघव धर्म और सत्य धर्म पर अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि लाघव का अर्थ है हल्का बनना, द्रव्य से अल्पोपभोगी होना और भाव से रिद्धि, रस, सात गौरव आदि का परित्याग करना। लाघव धर्म हमें बाहर और भीतर दोनों ओर से हल्का रहने की प्रेरणा देता है। सत्य धर्म के बारे में कहा कि आत्म-शुद्धि, आत्म-उपलब्धि, आत्म-साक्षात्कार और आत्मा के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण सोपान है सत्य की साधना।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने वाणी संयम दिवस पर अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि शास्त्रों में अनेक स्थानों पर वाणी के विवेक के निर्देश प्राप्त होते हैं। कोई व्यक्ति प्रयोजन से बोलता है तो वह भी मितभाषी है। जब व्यक्ति वचन-गुप्ति करता है तो वह अपना हित साधता है और भाषा-समिति का अभ्यास करने वाला व्यक्ति अपने साथ-साथ दूसरों का भी हित साधता है। वाणी को भी हमेशा मधुर बनाए रखना चाहिए।

मुनि रत्नेशकुमारजी ने तीर्थंकर शांतिनाथ भगवान के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

दुर्लभ मनुष्य जीवन में ही कर सकते हैं धर्म का आचरण : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
22 अगस्त,, 2025

अध्यात्म के हिमालय शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पर्वाधिराज पर्युषण के तृतीय दिवस अपनी पावन देशना में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के अंतर्गत मरीचि कुमार के भव का वर्णन करते हुए फरमाया कि आगम में मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताया है। मनुष्य जन्म भी यदि सुकुल में हो और धार्मिक माहौल में हो तो वह ज्यादा लाभदायी होता है। नयसार की आत्मा को मनुष्य जन्म का अवसर भगवान ऋषभ के संसार पक्षीय परिवार में प्राप्त होता है और नयसार की आत्मा भरत के पुत्र रूप में जन्म लेती है। पुत्र का नाम मरीचि कुमार रखा गया। दादा — अध्यात्म जगत के उत्कृष्ट पुरुष अर्थात् तीर्थंकर और पिता — भौतिक जगत के उत्कृष्ट पुरुष अर्थात् चक्रवर्ती, ऐसा कुल मरीचि को प्राप्त हुआ। चतुर्दशी के संदर्भ में गुरुदेव द्वारा हाजरी का क्रम संपादित किया गया।

साध्वीवर्याजी ने दस धर्मों में आर्जव धर्म और मार्दव धर्म पर अपनी अभिव्यक्ति दी। आर्जव धर्म के दो आयाम हैं — भाव विशुद्धि और विसंवादन। तीन योग — मन, वचन व काय योगों की ऋजुता ही आर्जव है। यदि भाव अशुद्ध हों तो मन, वचन और काय योगों में वक्रता आ जाती है। इससे व्यक्ति माया करने लगता है। ऋजुता के लिए दूसरी चीज है, कथनी और करनी में समानता। आत्मा को सरल बनाने के लिए मार्दव को अपनाना होगा। मार्दव का तात्पर्य है — मद का निग्रह करना। आर्जव और मार्दव के ये दो पृष्ठ पढ़कर ही हम आत्मा की पोथी रूपी पुस्तक को पढ़ पाएँगे। मुख्यमुनि महावीर कुमारजी ने गीतिका के माध्यम से ऋजुता और मृदुता पर अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने 'सामायिक दिवस' पर अपनी अभिव्यक्ति में कहा कि साधु की सामायिक और गृहस्थ की सामायिक में अंतर होता है। साधु की सामायिक यावज्जीवन के लिए है जबकि श्रावक की सामायिक एक मुहूर्त की होती है। सामायिक का अर्थ है — सावद्य योग को छोड़ना और निरवद्य योग को स्वीकार करना। सामायिक एक आध्यात्मिक अनुष्ठान है। सामायिक में अठारह पापों का प्रत्याख्यान किया जाता है, इसलिए हमें अठारह पापों की जानकारी होनी चाहिए। तभी सामायिक की सही साधना की जा सकती है। सामायिक में घर-गृहस्थी की चर्चा नहीं करनी चाहिए। सामायिक में आत्मा के बारे में ही चिंतन होना चाहिए।

सामायिक दिवस पर साध्वी कमनीयप्रभाजी, साध्वी आर्षप्रभाजी व साध्वी काम्यप्रभाजी ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 सितम्बर - 07 सितम्बर, 2025

संस्कार संवर्धन शिविर का हुआ आयोजन

बेंगलुरु।

तेरापंथ सभा गाँधीनगर, बेंगलुरु के तत्वावधान में डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ठाणा-2 के निर्देशन में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी बच्चों का संस्कार संवर्धन शिविर तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ।

इसमें पूरे बेंगलुरु की 13 ज्ञानशालाओं से 360 बच्चों ने सहभागिता दर्ज करवाई। शिविर को संबोधित करते हुए डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा — 'जैसे गाड़ी को सुव्यवस्थित चलने में ब्रेक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, वैसे ही व्यक्ति के जीवन में धार्मिक संस्काररूपी ब्रेक दुखद दुर्घटनाओं से बचा सकते हैं।

अतः अच्छे संस्कारों का संवर्धन करना वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक है। धर्म ही व्यक्ति को कठिन मार्ग से निकालने का कार्य करता है तथा आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति करवाता है।'

मुनिश्री ने ज्ञानार्थी बच्चों को आगामी पर्युषण महापर्व के दौरान द्रव्यसीमा की नवरंगी, सामायिक की नवरंगी तथा उपवास का तेला करने की प्रेरणा दी।

मुनि आदित्य कुमार जी ने शिविर में उपस्थित सभी को ध्यान का प्रयोग करवाया। ज्ञानशाला विद्यार्थियों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने किया।

ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक मानकचंद ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा के मंत्री विनोद छाजेड़ ने इस वर्ष बेंगलुरु ज्ञानशाला को मिले विशेष पुरस्कारों की घोषणा की — श्रेष्ठ ज्ञानार्थी अक्षत छाजेड़, श्रेष्ठ ज्ञानशाला कामाक्षी पाल्या, श्रेष्ठ प्रशिक्षिका मंजू दक तथा वरिष्ठ प्रशिक्षिका सरस्वती बाफना।

शिविर के प्रथम चरण में हनुमंत नगर ज्ञानशाला ने नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की। फॉल्कन सिटी ज्ञानशाला के बच्चों ने नशा मुक्ति पर रोचक नाटक प्रस्तुत किया। त्यागराज नगर ज्ञानशाला के बच्चों ने निर्जरा के 12 भेद पर शानदार प्रस्तुति दी। वी.वी. पुरम ज्ञानशाला ने ज्ञानशाला में आने के महत्व को गीत के माध्यम से उजागर किया।

विल्सन गार्डन तथा कोरमंगला ज्ञानशाला के बच्चों ने ए.आई. के दुष्परिणाम बताए। टेनरी रोड ज्ञानशाला द्वारा भगवान महावीर और गौतम का संवाद प्रस्तुत किया गया। शंकर मठ ज्ञानशाला द्वारा भगवान ऋषभ और श्रेयांश कुमार के तपस्या पारणा का दृश्य उजागर किया गया। वहीं महालक्ष्मी लेआउट तथा एच.एस.आर. ज्ञानशाला द्वारा मनमोहक एक्शन गीत की प्रस्तुति दी गई। जिगनी बन्नेरघट्टा ज्ञानशाला द्वारा 8 कर्मों पर आधारित प्रेरणादायी प्रस्तुति हुई।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी के उपलक्ष्य में चित्रकला प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले बच्चों तथा जज कांता लोढ़ा को सम्मानित किया गया। मुंबई से पधारे जादूगर रमेश भाई जैन ने बच्चों को जादू के माध्यम से जैन धर्म के शिक्षा सूत्रों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

शिविर के द्वितीय चरण में औरंगाबाद (छत्रपति संभाजी नगर) से पधारे मोटिवेशनल स्पीकर सुदर्श रजनीश कटारिया ने बच्चों एवं अभिभावकों का ज्ञानवर्धक सेशन लेते हुए आधुनिक जीवनशैली से जुड़ी समस्याओं का समाधान सरल भाषा में प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन बबीता चोपड़ा एवं नीतागादिया ने किया। शिविर में ज्ञानशाला जोन संयोजिका चेतना वेदमुथा, लता गांधी, बबीता चोपड़ा, पवन संचेती, सहसंयोजिका अनीता नाहर, सीमा श्रीश्रीमाल आदि 85 से अधिक प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही।

सुदर्श कटारिया का मोमेंटो से सम्मान किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी बोहरा, मंत्री विजेता रायसोनी एवं महासभा से प्रकाश लोढ़ा ने तेरापंथ सभा गांधीनगर, बेंगलुरु द्वारा बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए पारितोषिक वितरित किए।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 प्रतियोगिता का आयोजन

नई दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 का स्कूल स्तर का आयोजन शिशु भारती विद्यालय, कपूर बस्ती, गाँधी नगर में आयोजित हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

इस कार्यक्रम का मार्गदर्शन विद्यालय के प्रधानाचार्य सुशील कुमार शर्मा ने किया और आयोजन अर्शिता जैन के निर्देशन में हुआ। कोऑर्डिनेटर श्वेता शर्मा का श्रम भी सराहनीय रहा।

विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट को बहुत सराहा। बच्चों ने चित्रकला, एकल एवं सामूहिक गायन, भाषण, कविता आदि विषयों की अपनी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली के मंत्री मोहित शर्मा, प्रचार प्रसार मंत्री दिनेश शर्मा एवं मीडिया प्रभारी ऋषभ बैद उपस्थित रहे।

संकल्प शक्ति और निरंतरता से संभव है हर समस्या का समाधान

सिरियारी।

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के प्रेक्षाध्यान भवन में आयोजित प्रेक्षाध्यान मासिक शिविर के समापन कार्यक्रम में शिविर साधकों को संबोधित करते हुए मुनि धर्मेशकुमार जी ने कहा— 'अप्रभावित होकर खेलने वाला ही विजय प्राप्त करता है। उसी प्रकार ध्यान-साधना में आने वाले विघ्नों से अप्रभावित रहकर ही साधक अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकता है। संकल्प शक्ति और निरंतरता से हर समस्या का समाधान संभव है। जीवन के संघर्ष में अपनी कमजोरियों पर विजय पाकर अच्छाइयों की ओर बढ़ने वाला ही सच्चा विजयी कहलाता है।'

शिविर का शुभारंभ साधकों द्वारा प्रेक्षागीत के संगान से हुआ। संस्थान के व्यवस्थापक महावीर सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा— 'दीपक, चंद्र, तारे और सूर्य का प्रकाश भी अधूरा है, किंतु हमारी आत्मा का प्रकाश पूर्ण है। ध्यान का लक्ष्य है उसी आत्मिक प्रकाश को पाना। जब आत्मा का प्रकाश प्रकट हो जाता है, तभी पूर्णता का साक्षात्कार होता है।' इस अवसर पर अनेक साधकों ने अपने अनुभव व विचार व्यक्त किए।

तप के बिना संभव नहीं है आत्म-सिद्धि

गांधीनगर, बेंगलुरु।

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में, मधुबाला राजकुमार सेठिया की 27 दिवसीय तपस्या के उपलक्ष्य में मासखमण तप अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गांधीनगर (बेंगलुरु) द्वारा तेरापंथ सभा भवन में किया गया।

इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि जैन धर्म में तपस्या का विशेष महत्व है। चाहे तीर्थंकर हों, साधु हों या सामान्य गृहस्थ श्रावक—सभी के लिए तप आवश्यक माना गया है। तप के बिना आत्म-सिद्धि संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि अनित्य भावना का चिंतन करने वाला व्यक्ति धर्म में आगे बढ़ता है और कठिन से कठिन तपस्या भी सहजता से कर सकता है।

तपस्या उत्साह और दृढ़ मनोबल के बिना संभव नहीं है। मधुबाला सेठिया ने उच्च मनोबल का परिचय देते हुए गुरु-आशीर्वाद से एक माह की कठिन तपस्या पूर्ण की है। मुनिश्री ने तपस्विनी बहन के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की।

'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमारजी ने कहा कि मुनिश्री की प्रेरणा से इस वर्ष गांधीनगर तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक धर्मोत्सव के अंतर्गत तपस्या का विशेष ठाट देखने को मिल रहा है। मुनिश्री ने गीत के माध्यम से तप अनुमोदना व्यक्त की।

कार्यक्रम में सेठिया परिवार की बहनों ने मंगलगीत प्रस्तुत किए। भव्या सेठिया, दिलखुश बाफना एवं प्रवीण रायसोनी ने तपस्विनी बहन की तप अनुमोदना में अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। तेरापंथ सभा द्वारा तपस्विनी बहन का पचरंगी दुपट्टा एवं साहित्य देकर सम्मान किया गया। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

गुरु दर्शन समन्वय यात्रा सानंद सम्पन्न

गोरेगांव, मुंबई।

2 दिवसीय गुरु दर्शन समन्वय यात्रा का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार संगान से हुआ। अहमदाबाद कोबा में बस एवं ट्रेन द्वारा सभी यात्रियों का आगमन हुआ। तत्पश्चात गुरु दर्शन यात्रा के अंतर्गत पूज्यप्रवर आचार्य श्री महाश्रमण जी से प्रेरणा पाथेय ग्रहण किया गया तथा अमृतवाणी का रसपान किया गया।

यात्रियों ने मुख्यमुनि श्री महावीर कुमारजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वी वर्या जी सहित अन्य चारित्रात्माओं के सेवा-दर्शन किए। समन्वय यात्रा के दौरान पूज्यप्रवर को चारभुजा पधारने का अनुरोध चारभुजा के पूरे पुजारी समाज द्वारा किया गया। सिंघवी परिवार की बहनों ने गीतिका का संगान किया। रमेश सिंघवी ने विस्तार से यात्रा के महत्व को पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में निवेदन किया।

प्रवक्ता उपासक सुरेश ओस्तवाल ने तेरापंथ समाज, गोरेगांव की गतिविधियों की जानकारी दी एवं गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। अहमदाबाद व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष गौतम बाफना, पारस दुग्गड़, चारभुजा उपसरपंच नंदलाल सेवक, मूर्तिपूजक समाज से सुरेश सिंघवी, किशननी कावडिया आदि ने भी पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपने विचार प्रकट किए।

यह यात्रा मेवाड़ चारभुजा के रमेश, रेखा, कनिष, हिया एवं सिंघवी परिवार के सहयोग तथा संपूर्ण स्टाफ के विशेष परिश्रम से लगभग 350 सदस्यों की सहभागिता के साथ आनंदपूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार-प्रदर्शन प्रेक्षा प्रशिक्षक पारस दुग्गड़ ने किया।

उत्तर राजस्थान, थली, पंजाब, हरियाणा स्तरीय 'युवा सम्मेलन' का हुआ आयोजन

लाडनूं

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, लाडनूं द्वारा उत्तर राजस्थान, थली, पंजाब, हरियाणा स्तरीय 'युवा सम्मेलन' का आयोजन 'योगक्षेम युवाओं का' थीम पर दिनांक 16-17 अगस्त 2025 को विभिन्न सत्रों में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती 'शासनश्री' मुनि विजयकुमारजी एवं सुशिष्य मुनि जयकुमारजी के सान्निध्य में जैन विश्व भारती में किया गया। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में आयोजित इस द्विदिवसीय आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष धरमचंद लूंकड़, अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत तथा महामंत्री अमित नाहटा उपस्थित रहे।

उत्तर राजस्थान, थली एवं पंजाब की विभिन्न शाखा परिषदों से अच्छी संख्या में उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए मुनि विजयकुमारजी ने कहा- ''सामाजिक एवं धार्मिक चेतना के जागरण का एक सशक्त माध्यम है- संगठन। संगठन में शक्ति होती है। शक्ति का सम्यक उपयोग होना आवश्यक है। सही दिशा में शक्ति का नियोजन करते हुए दायित्व के साथ चलने वाला छोटे से छोटा संगठन भी आकाशव्यापी ऊँचाइयों को प्राप्त हो सकता है। तेरापंथ युवक परिषद से जुड़े युवा आचार्यश्री महाश्रमणजी से प्राप्त पथ दर्शन के अनुसार सम्यक दिशा में अपनी शक्ति का नियोजन करते हुए स्वयं का विकास भी करें और संगठन के विकास में भी योगभूत बनें।'' मुनि जयकुमारजी ने कहा- ''युवा शक्ति का प्रतीक व ऊर्जा का पुंज होता है। युवा देश की तकदीर व तस्वीर है। युवा पराक्रम का प्रतीक होता है। वह अपने पुरुषार्थ व पराक्रम के द्वारा असंभव प्रतीत होने वाले कार्य को भी संभव बना देता है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आध्यात्मिक निर्देशन में चलने वाला संगठन है। हजारों युवक इस संगठन से जुड़े हैं। युवा नशे की लत से दूर रहते हुए समाज व राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान देने का प्रयास करें।''

'नमस्कार महामंत्र' के उच्चारण के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तेयुप लाडनूं के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। 'श्रावक निष्ठा पत्र' का वाचन महामंत्री अमित नाहटा ने किया। स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए तेयुप लाडनूं के अध्यक्ष सुमित मोदी ने उपस्थित विशिष्ट महानुभावों तथा संभागीगण का भावभीना अभिनंदन किया।

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में 'समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर अपने विचार रखते हुए भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा- ''शांति का रास्ता शक्ति से होता हुआ गुजरता है। कठोर परिश्रम किए बिना कोई भी व्यक्ति शक्तिशाली नहीं बन सकता। राष्ट्र निर्माण का मूल मंत्र है कठोर परिश्रम। विकसित एवं समृद्ध भारत का मूल स्तम्भ भारत का अध्यात्म है। आज का युवा यदि राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहता है तो सर्वप्रथम उसे स्वयं का निर्माण करना होगा। उसे अपने आपको आध्यात्मिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से शक्तिशाली बनाना होगा। अपने निर्माण में अपनी शक्ति का नियोजन करना होगा, तभी आज का युवा स्वनिर्माण के साथ राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे पाएगा। सदियों पूर्व भगवान महावीर जैसे महापुरुषों ने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का सूत्र बताया। यह सूत्र आज भी उतना ही प्रासंगिक और युवाओं के लिए उपयोगी है।''

राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अभातेयुप के त्रिआयामी उद्देश्यों सेवा, संस्कार व संगठन के बारे में जानकारी देते हुए संस्था में समर्पित भाव से कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने आगामी योगक्षेम वर्ष में लाडनूं में परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में अधिकाधिक युवाओं को उपस्थित होकर अपना योगक्षेम करने का निवेदन किया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने 17 सितम्बर को एमबीडीडी के अंतर्गत होने वाले 'रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0' एवं सीपीएस कार्यशाला के लिए सभी को आह्वान किया। महामंत्री अमित नाहटा ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि अभातेयुप की सभी परिषदें और साथी सक्रियता के साथ कार्य कर रहे हैं। योगक्षेम वर्ष में यह सक्रियता और अधिक बनी रहे, यह अपेक्षित है। अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य विकास बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 105वें जन्मोत्सव पर भारत सरकार द्वारा जारी स्मारक सिक्के का विमोचन जैन विश्व भारती की ओर से मुनिद्वय के सान्निध्य में भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी द्वारा किया गया, जिसका संचालन जैन विश्व भारती संचालिका समिति सदस्य राजेन्द्र खटेड़ द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का एक सत्र 'शासन गौरव' साध्वीश्री कल्पलताजी के सान्निध्य में रखा गया, जिसमें साध्वीश्री ने युवाओं को अपने उद्बोधन से लाभान्वित किया। शनिवारीय सामायिक एवं रात्रिकालीन भजन संध्या का आयोजन मुनि विजयकुमारजी एवं मुनि जयकुमारजी के सान्निध्य में आचार्य तुलसी स्मारक पर रखा गया, जिसमें सरगम के प्रतिभागी सरदारशहर से समागत चन्द्रप्रकाश सेठिया, गंगाशहर से रोशन बाफना, बीदासर से नवदीप ओसवाल एवं सुजानगढ़ से ममता बांठिया ने आमंत्रित गायकों के रूप में उपस्थित होकर सुमधुर भजनों को स्वर दिए।

अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य एवं लाडनूं शाखा प्रभारी पीयूष लूणिया ने विभिन्न सत्रों का संयोजन किया। आभार ज्ञापन तेयुप लाडनूं के मंत्री राजेश बोहरा ने किया। आयोजन के सहयोगी प्रकाश प्रमोद बैद-कोलकाता, कन्हैयालाल विकास बोथरा-इस्लामपुर एवं मनोज राजेश दूगड़-वापी तथा जैन विश्व भारती के विशेष सहयोग हेतु आभार ज्ञापित किया गया।

आयोजन को सफल बनाने में तेयुप लाडनूं की टीम, अभातेयुप कार्यालय टीम एवं जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष धरमचंद लूंकड़ के निर्देशन में संस्था में कार्यरत साथियों ने निष्ठापूर्ण श्रम किया। आयोजन में अभातेयुप राष्ट्रीय टीम से पवन नौलखा, विजेन्द्र छाजेड़, सतीश पुगलिया, संदीप ओस्तवाल, रोशन बागरेचा, तरूण भंसाली, अनुज जैन, अरिहंत गोयल सहित जैन विश्व भारती के संरक्षक भागचंद बरड़िया, तेरापंथी सभा के मंत्री राकेश कोचर, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद, तेरापंथ महिला मंडल से रेणु कोचर आदि अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

तप समाचार

विजयनगर, बैंगलोर। साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में रंजना भंडारी व सुनीता छाजेड़ ने 9 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

गुवाहाटी। मुनि डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार जी एवं मुनि रमेश कुमारजी के सान्निध्य में पूर्वी भादानी ने 9 दिन, श्रेयांस भादानी ने 8 दिन, हरविका महनोत ने 8 दिन तथा दीक्षा छल्लाणी ने 8 दिन की तपस्या पूर्ण की।

बालोतरा। साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में राजकुमार ओस्तवाल, मानवी ओस्तवाल एवं मयंक ओस्तवाल ने अठाई तप का प्रत्याख्यान किया।

परीक्षार्थियों का सम्मान समारोह

चेन्नई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में विदुषी साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में जैन विद्या परीक्षा 2024 में अखिल भारतीय एवं चेन्नई स्तर पर वरीयता प्राप्त परीक्षार्थियों का सम्मान समारोह तेरापंथ भवन साहूकारपेट में आयोजित किया गया। अखिल भारतीय स्तर पर वरीयता सूची में स्थान बनाने वाले 14 एवं चेन्नई स्तर पर वरीयता प्राप्त 35 परीक्षार्थियों का सम्मान प्रमाणपत्र व उपहार के द्वारा किया गया। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्यक ज्ञान का विकास एवं आराधना ज्ञानावरणीय कर्म को क्षय करने का श्रेष्ठ माध्यम है। आपने संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित अधिकाधिक व्यक्तियों को जैन विद्या परीक्षा से जुड़ने की विशेष प्रेरणा दी। संचालन सभा के जैन विद्या प्रभारी हेमंत मालू एवं सहप्रभारी कमल सामसुखा ने किया। केंद्र व्यवस्थापक हरीश भंडारी का विशेष सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 सितम्बर - 07 सितम्बर, 2025

संबोधि

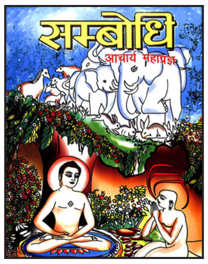

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

२७. तनुतमक्रोध-मान-माया-लोभो जितेन्द्रियः।
प्रशान्तचित्तो दान्तात्मा, पद्मलेश्यो भवेत् पुमान्॥

जिसके क्रोध, मान, माया और लोभ बहुत अल्प हैं, जो जितेन्द्रिय है, जिसका मन प्रशांत है और जिसने आत्मा का दमन किया है, वह व्यक्ति पद्मलेश्या वाला होता है।

२८. आर्त्तरौद्रे वर्जयित्वा, धर्म्यशुक्ले च साधयेत्।
उपशान्तः सदा गुप्तः, शुक्ललेश्यो भवेत् पुमान्॥

जो आर्त्त और रौद्रध्यान का वर्जन करता है, जो धर्म और शुक्लध्यान की साधना करता है, जो उपशांत है और जो निरंतर मन, वचन और काया से गुप्त है, वह व्यक्ति शुक्ललेश्या वाला होता है।

२९. लेश्याभिरप्रशस्ताभिर्मुमुक्षो! दूरतो व्रज।
प्रशस्तासु च लेश्यासु, मानसं स्थिरतां नय॥

हे मुमुक्षु ! तू अप्रशस्त लेश्याओं से दूर रह और प्रशस्त लेश्याओं में मन को स्थिर बना।

लेश्या जैन पारिभाषिक शब्द है। उसका संबंध मानसिक विचारों या भावों से है। यह पौद्‌गलिक है। मन, शरीर और इन्द्रियां पौद्‌गलिक हैं। मनुष्य बाहर से पुद्‌गलों को ग्रहण करता है और तदनुरूप उसकी स्थिति बन जाती है। आज की भाषा में इसे 'ओरा' या 'आभा मंडल' कहा जाता है। इस पर बहुत अनुसंधान हुआ है। इसके फोटो लिए गए हैं। जीवित और मृत का निर्णय इसी आधार पर किया जा सकता है। योग-सिद्ध गुरु के लिए आवश्यक है कि वह 'ओरा' का विशेषज्ञ हो। शिष्य की परीक्षा 'ओरा' देखकर करें। वह शिष्य पर दृष्टि डालकर प्रकाश को देखता है और निर्णय लेता है। 'ओरा' हमारी आंतरिक स्थिति का प्रतिबिंब है। आप अपने को कितना ही छिपाएं, किन्तु आभामंडल के विशेषज्ञ व्यक्ति से गुप्त नहीं रह सकते। आपके विचारों या भावों का प्रतिनिधित्व शरीर से निकलने वाली आभा प्रतिक्षण कर रही है। वह रंगों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। हम महापुरुषों के सिर के पीछे आभा-वलय देखते हैं। वह और कुछ नहीं, मन की पूर्ण शांत स्थिति में निर्मित 'ओरा' आभा मंडल है।

शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म प्रकाश-किरणों का 'अंडाकार' आभा मंडल 'ओरा' है। इसे साइकिक एटमोसफियर, मेग्नेटिक एटमोसफियर भी कहते हैं। यह शरीर से दो-तीन फुट की दूरी तक रहता है। मानस परिवेश ६ से १० फुट तक रहता है। यह शरीर के मध्य में बहुत गहरा और आसपास हल्का होता है। जिनके आचार-विचार में स्थायित्व आ जाता है उनका 'ओरा' स्थायी बन जाता है, अन्यथा वह प्रतिक्षण भावों के साथ बदलता रहता है। ओरा के रंग तथा छाया आश्चर्यजनक व रुचिकर होते हैं, स्थूल शरीर की भांति मेंटल-मानसिक शरीर भी बड़ा इंटरेस्टिंग है। ओरा को समुद्र की तरह समझा जा सकता है। कभी शांत और कभी भयंकर अशांत। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री जेतांजी (नाथद्वारा) दीक्षा क्रमांक 156

साध्वीश्री सुविनीत, निर्मल, अवसरज्ञ एवं बुद्धिमान थी। आपने उपवास, बेले आदि बहुत किए। ऊपर में महीने तक का तप किया। सम्पूर्ण तप का विवरण उपलब्ध नहीं है।

– साभारः शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

क्रान्ति का सिंहनाद

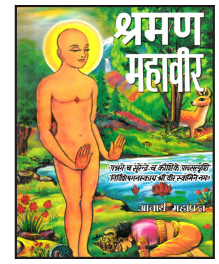

मनुष्य कर्म से ब्राह्मण होता है, कर्म से क्षत्रिय।

कर्म से वैश्य होता है और कर्म से शूद्र।

विजयघोष, 'ब्राह्मण का कर्म क्या है?

मुनि, 'ब्राह्मण का कर्म है- ब्रह्मचर्य। जो व्यक्ति ब्रह्म का आचरण करता है, वह ब्राह्मण होता है। जैसे जल में उत्पन्न कमल उसमें लिप्त नहीं होता, वैसे ही जो मनुष्य काम में उत्पन्न होकर उसमें लिप्त नहीं होता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं। जो राग, द्वेष और भय से अतीत होने के कारण मृष्ट स्वर्ण की भांति प्रभास्वर होता है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं।'

'जो अहिंसक, सत्यवादी और अकिंचन होता है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं।

विजयघोष का विचार-परिवर्तन हो गया। उसने कर्मणा जाति का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया।

हरिकेश जाति से चांडाल थे। वे मुनि बन गए। वे वाराणसी में विहार कर रहे थे। उस समय रुद्रदेव पुरोहित ने यज्ञ का विशाल आयोजन किया। हरिकेश उस यज्ञ-वाटिका में गए। रुद्रदेव ने मुनि का तिरस्कार किया। वे उससे विचलित नहीं हुए। दोनों के बीच लम्बी चर्चा चली। चर्चा के मध्य रुद्रदेव ने कहा, 'मुने ! जाति और विद्या से युक्त ब्राह्मण ही पुण्यक्षेत्र हैं।

मुनि ने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा- जिनमें क्रोध, मान, हिंसा, असत्य, चोरी और परिग्रह है, वे ब्राह्मण जाति और विद्या से विहीन हैं। वे पुण्य-क्षेत्र नहीं हैं।

'तुम केवल वाणी का भार ढो रहे हो। वेदों को पढ़कर भी तुम उनका अर्थ नहीं जानते। जो साधक विषम स्थितियों में समता का आचरण करते हैं, वे ही सही अर्थ में ब्राह्मण और पुण्य-क्षेत्र हैं।

रुद्रदेव को यह बात बहुत अप्रिय लगी उसने मुनि को ताड़ना देने का प्रयत्न किया।

किन्तु मुनि की तपस्या का तेज बहुत प्रबल था। उससे रुद्रदेव के छात्र प्रताड़ित हो गए। उस समय सबको यह अनुभव हुआ-

तप का महत्त्व प्रत्यक्ष है जाति का कोई महत्त्व नहीं है। जिसके तेज से रुद्रदेव के छात्र हतप्रभ हो गए, वह हरिकेश मुनि चांडाल का पुत्र है।

भगवान् महावीर का युग निश्चय ही जातिवाद या मतवाद के प्रभुत्व का युग था। उसका सामना करना कोई सरल बात नहीं थी। उसका प्रतिरोध करने वाले को प्राण-समर्पण की तैयारी रखनी ही होती। भगवान् महावीर ने अभय और जीवन-मृत्यु में समत्व की सुदृढ़ अनुभूति वाले अनगिन मुनि तैयार कर दिए। वे जातिवाद के अभेद्य दुर्गों में जाते और उद्देश्य में सफल हो जाते।

२. साधुत्व : वेश और परिवेश

वह युग धर्म की प्रधानता का युग था। साधु बनने का बहुत महत्त्व था। श्रमण साधु बनने पर बहुत बल देते थे। इसका प्रभाव वैदिक परम्परा पर भी पड़ा। उसमें भी संन्यास को सर्वोपरि स्थान मिल गया। अनेक परम्पराओं में हजारों-हजारों साधु थे। समाज में जिसका मूल्य होता है, वह आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। साधुत्व जनता के आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु बन गया था। किन्तु साधुत्व कोई बाल-लीला नहीं है। वह इन्द्रिय, मन और वृत्तियों के विजय की यात्रा है। इस यात्रा में वही सफल हो सकता है जो दृढ़-संकल्प और आत्मलक्षी दृष्टि का धनी होता है।

'भगवान् महावीर ने देखा बहुत सारे श्रमण और संन्यासी साधु के वेश में गृहस्थ का जीवन जी रहे हैं। न उनमें ज्ञान की प्यास है, न सत्य-शोध की मनोवृत्ति, न आत्मोपलब्धि का प्रयत्न और न आन्तरिक अनभूति की तड़प । वे साधु कैसे हो सकते हैं? भगवान् साधु-संस्था की दुर्बलताओं पर टीका करने लगे। भगवान् ने कहा-

'सिर मुंडा लेने से कोई श्रमण नहीं होता। ओम् का जप करने, से कोई ब्राह्मण नहीं होता। अरण्यवास करने से कोई मुनि नहीं होता। वल्कल चीवर पहनने से कोई। तापस नहीं होता। श्रमण होता है समता से। ब्राह्मण होता है ब्रह्मचर्य से। मुनि होता है ज्ञान से। तापस होता है तपस्या से। (क्रमशः)

17 सितम्बर 2025 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0

चार पंक्तियों की सारी वसुधा,
दया भाव से अपनेपन का गाए गान
पूजन वंदन अभिनंदन कर
सदा धर्म का रखें ध्यान
सहयोगी बन साथ निभाए
मानवता में फूंके प्राण
मन से मन के भाव मिलाए
तन से करें रक्त का दान,
तन से करें रक्त का दान

सरला मिश्रा, कवयित्री

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद लाया है अद्भुत अभियान
एमबीडीडी के माध्यम से होने जा रहा है पूरे विश्व में रक्तदान
रक्तदान दे सकता है असंख्य लोगों के जीवन में अलौकिक वरदान
आईए एमबीडीडी के माध्यम से सभी मिलकर रचें नया कीर्तिमान।।

कहते हैं किसी को जीवनदान देना ईश्वर की उपासना से भी बढ़कर धर्म है। यह केवल एक पावन पुनीत कर्म नहीं बल्कि सबसे बड़ा धर्म है।

मैं कवियत्री सोनल जैन आप सभी को जय जिनेन्द्र करते हुए निवेदन करती हूं कि रक्तदान के इस महायज्ञ में आप सभी सहभागी बनें। इस प्रयास को इस संकल्प को हम सभी मिलकर जन-जन तक पहुंचाएं और अपने मानव जीवन को सार्थक बनाएं। तो चलिए सहभागी बनते हैं रक्तदान के इस महामहोत्सव में 17 सितंबर 2025 को, इसी निवेदन के साथ धन्यवाद! जय जिनेन्द्र!

सोनल जैन, सूरत, अंतरराष्ट्रीय कवयित्री

जीवन के लक्ष्य को साधो साधक अर्जुन की तरह संधान करो
मानव हो मानवता का धर्म निभावो कर्ण की तरह महादान करो
हो रक्त की पुकार तो उठो हे रक्तवीर, रक्तदान करो,
रक्तदान करो, रक्तदान करो, महादान करो, रक्तदान करो

अभातेयुप एवं भारत सरकार के सयुक्त तत्वावधान में 17 सितम्बर 2025 को एक विश्व व्यापी मुहिम चल रही है रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0। इसमें ब्लड डोनेशन करना है आप सभी को और इस मुहिम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना है। अपने मानव होने का धर्म निभाना है, इस मुहिम को घर-घर तक जरूर पहुचाना है। नमस्कार, धन्यवाद।

श्रीमती दीपा सैनी, राष्ट्रीय कवियत्री

मुझे बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि 17 सितंबर 2025 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा एक ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया जा रहा है। मेरी आप सबसे अपील है कि आप लोग ज्यादा से ज्यादा संख्या में आएं और इस ब्लड डोनेशन कैंप में रक्तदान जरूर करें।

हम सभी को मालूम है कि ब्लड डोनेशन कई लोगों की जिंदगी बचा सकता है। एक बार फिर मैं आपसे आग्रह करता हूं आपसे आह्वान करता हूं कि आप लोग अभातेयुप द्वारा आयोजित इस ब्लड डोनेशन कैंप में रक्तदान कर अपना मानव धर्म निभाएं। जयहिंद, जय भारत।

श्री अमित लोढ़ा (IPS) अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, बिहार

नमस्कार जय जिनेंद्र

हम भारत के वासी हैं हमारे यहां दान का बड़ा महत्व है हमारे यहां ऋषि हुए मानवता के लिए अपनी हड्डियों का दान कर दिया आज के युग में रक्तदान यह परंपरा बहुत महत्वपूर्ण रूप से चल रही है 17 सितंबर को तेरापंथ युवक परिषद भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधान में भारतभर में रक्तदान का अमृत महोत्सव 2.0 को मनाया जा रहा है आप घर से बाहर निकाल कर किसी भी रक्तदान केंद्र में पहुंचे और रक्तदान कीजिए आपके रक्त से कोई भी नया जीवन प्राप्त कर सकता है मुस्कान बढ़ती है डोनेट ब्ल्ड मैं कभी राजेश चेतन आप सबसे अपील करता हूं कि 17 सितंबर को भारी संख्या में घर से निकलकर रक्तदान करें और एक विश्व कीर्तिमान स्थापित करें बहुत-बहुत धन्यवाद।

राजेश चेतन, दिल्ली, राष्ट्रीय कवि

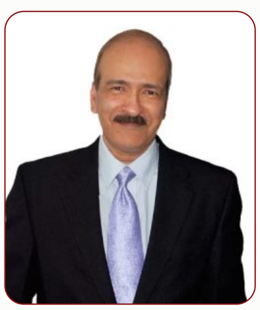

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद 17 सितंबर 2025 को मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव कर रही है। बहुत चुनिंदा दिन है, जो न केवल अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का स्थापना दिवस है बल्कि साथ में हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी का जन्म दिन भी है। इस मौके पर जो इतना अच्छा काम कर रहे हैं, इसके लिये मैं बधाई देता हूं। आगे से आगे काम करते रहें और अच्छे से अच्छे काम करते रहें, इसके लिये मैं मंगलकामना करता हूं।

चेयरमैन, जीबीएम हॉस्पिटल, उदयपुर

नितीन गडकरी
NITIN GADKARI

सत्यमेव जयते

मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमा
भारत सरकार
Minister
Road Transport and Highw
Government of India

514
जा.क्र. ..../वीआयपी/परि/२०२३
दिनांक 24 AUG 2025

शुभकामनाएं

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद 'रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0' के राष्ट्रीय स्तर के महाअभियान के लिए शुभकामनाएँ। रक्तदान, जीवन दान के समान है और समाज में स्वास्थ्य और मानवता के संदेश को फैलाने में यह अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आपका यह प्रयास न केवल रक्तदाताओं की संख्या बढ़ाने में सहायक होगा, बल्कि समाज में सेवा भाव, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रभक्ति की भावना को भी प्रबल करेगा। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि इसी उत्साह और समर्पण के साथ इस महाअभियान को सफल बनाएं।

इस पुनीत कार्य के लिए मैं आप सभी को शुभकामनाएँ देता हूँ। ईश्वर आपके प्रयासों को सफल बनाए और समाज में स्वास्थ्य एवं मानव सेवा का संदेश देता रहे।

भवदीय
(नितिन गडकरी)

श्री. अंकुर बोरड
मंत्री, तेरापंथ युवक परिषद
मो. ९३२५६२२२७५

Room No. 501, Transport Bhawan, 1, Sansad Marg, New Delhi – 110 001, Tel.: 011-23710121, 23711252 (O), 2371902
E-mail: nitin.gadkari@nic.in; website-www.morth.nic.in
Camp Office Nagpur : Gadkari Wada, Upadhye Road, Mahal, Nagpur - 440032(M.S.)
Tel.: 0712-2239918/20/22/23/24 Email : office@nitingadkari.net

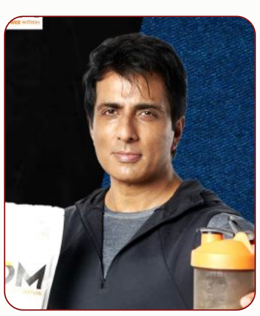

नमस्कार देशवासियों, 17 सितम्बर को आयोजित हो रहा है दुनिया का सबसे बड़ा ब्लड डोनेशन अभियान, मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव आपकी एक बूंद किसी की पूरी जिन्दगी बना सकती है। जिन्दगी ब्लड डोनेशन सेंटर में जाकर जीवनदान अवश्य दें. एक बूंद रक्त, एक अमुल्या उपहार. एक बार फिर, ABTYP को मेरी ओर से ढेरों बधाईयां और शुभकामनाएं जय हिन्द।

श्री सोनू सूद, अभिनेता

17 सितम्बर 2025 को मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव अभातेयुप के अंतर्गत होने जा रहा है। मेरा सबसे निवेदन है कि इसमें बढ़-चढ़कर भाग लें। ब्लड डोनेशन एक बड़ा ही नेक काम है। इसमें जितना बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, उतनी ही आप दूसरों की मदद कर पाएंगे। मेरा आपसे पुनः निवेदन है इसमें बढ़-चढ़कर भाग लें और इस ब्लड डोनेशन को सक्सेसफुल बनाएं।

श्री रवि बिश्नोई, क्रिकेटर

: शुभकामनाओं सहित :
AOM GROUP
मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 सितम्बर - 07 सितम्बर, 2025

आचार्य भिक्षु

01 सिंह स्वप्न को देखकर, मां दीपा खुशहाल।
उठकर तन्मय हो करे, प्रभु सुमिरण तत्काल।।

02 भीखण बुद्धि निधान है, चाचा देते थाप।
कांटा पगड़ी में रखा, दूर हुआ संताप।।

05 दो आज्ञा तुम हर्ष से, सपना हो साकार।
गूंजेगा यह शेर ज्यों, बन भीखण अणगार।।

06 स्थानक से अभिनिष्क्रमण, मन में पक्की ठान।
सुनो संघ की आण है, न दे कोई स्थान।।

09 शुभ आषाढ़ी पूर्णिमा, है संध्या शनिवार।
दीक्षा तेरापंथ की, भिक्षु करे स्वीकार।।

10 कारागृह में, स्वामजी! दर्शन कैसे होय।
टूट पड़ी हैं बेड़ीयां, दर्शन ऐसे होय ।।

जीवन झांकी

03 भीखण अल्पवयस्क है, करते पीले हाथ।
शादी बगड़ी नगर में, सुगणी बाई साथ।।

04 पत्नी के देहांत से, नश्वर जग साकार।
बिना गमाए एक क्षण, करना आत्मोद्धार।।

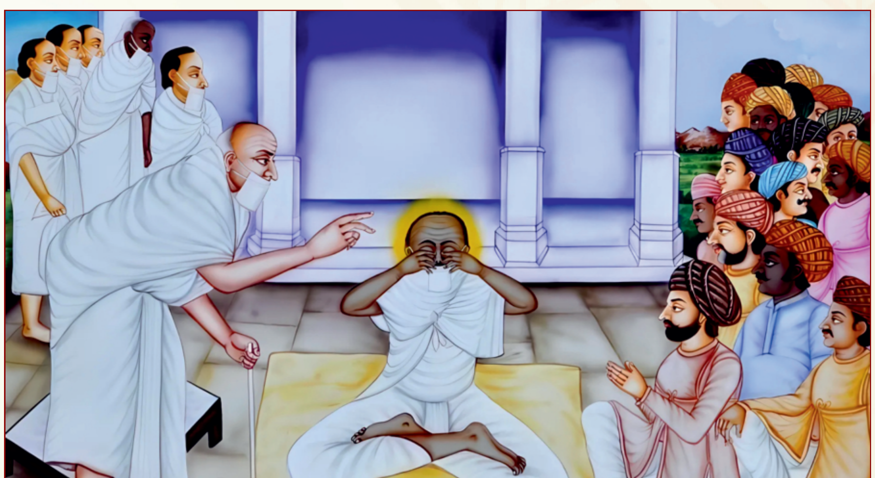

07 रघुवर भीखण से कहे, मत कर खींचातान।
शुद्ध साधुपन दो घड़ी, पाए केवलज्ञान।।

08 जोधाणै की हाट में, श्रावक बैठे देख।
फतहमल्ल दीवानजी, करते प्रश्न अनेक।।

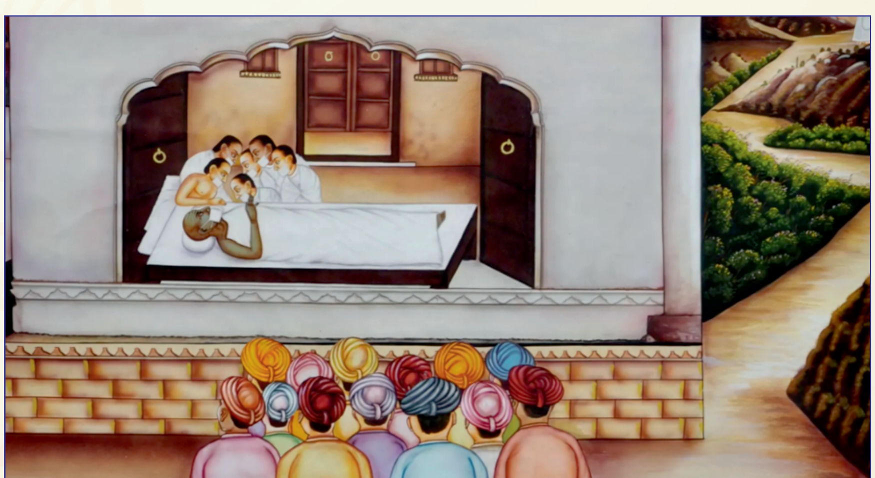

11 सिरियारी की हाट में, कर अनशन तिविहार।
अंतर निर्मल भाव में, भिक्षु है अणगार ।।

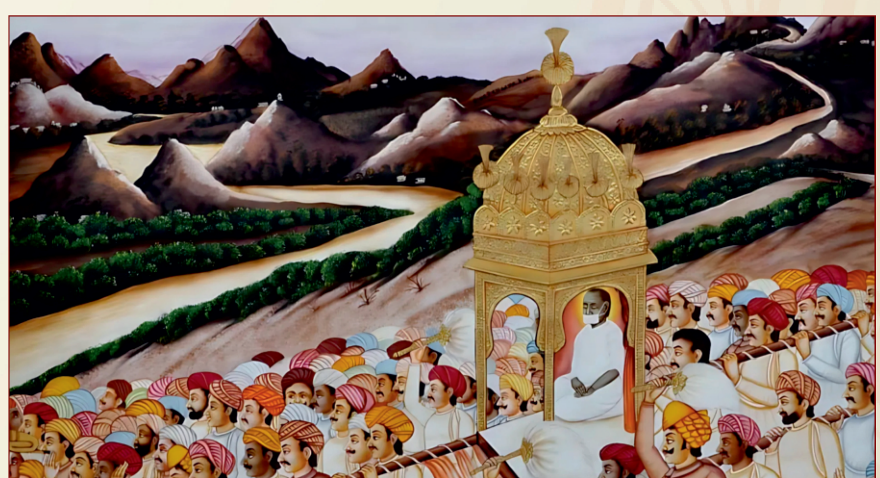

12 तेरस मंगलवार को, करते महाप्रयाण।
भक्त हजारों साथ में, करते जय-जय गान ।।

दोहे संरचना– मुनि जंबूकुमार (मिंज़ूर)

17 सितम्बर 2025 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0

श्री अर्जुनराम मेघवाल
केंद्रीय विधि एवं कानून मंत्री-भारत सरकार

श्री प्रताप जाधव
केंद्रीय आयुष मंत्री-भारत सरकार

श्री जी. किशन रेड्डी
केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री-भारत सरकार

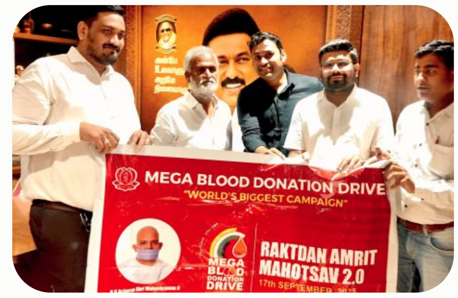

श्री पी. के. शेखर बाबू
धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग मंत्री-तमिलनाडू

श्री हिकमत कार्की
मुख्यमंत्री-कोशी प्रदेश, नेपाल

श्री जोगाराम पटेल
विधि एवं न्यायिक कार्य मंत्री-राजस्थान

श्री आर. राजेन्द्र
पर्यटन मंत्री-तमिलनाडू

श्रीमती शोभा करंदलाजे
राज्य मंत्री, श्रम और रोजगार मंत्रालय-कर्नाटक

श्री तेजस्वी सूर्या
सांसद, बेंगलुरु दक्षिण (कर्नाटक)

डॉ. सी.एन. अश्वथ नारायण
विधायक-मल्लेश्वरम (कर्नाटक)

श्री विवेक गुप्ता
विधायक-जोरसाखो (प. बंगाल)

श्री अनिल गोयल
विधायक-कृष्णानगर, दिल्ली

श्री रविन्द्रसिंह भाटी
विधायक-शिव (राज.)

श्री उदयलाल भडाणा
विधायक-मांडल (राज.)

श्री अशोक कोठारी
विधायक-भीलवाड़ा (राज.)

समणी आर्जवप्रज्ञाजी, समणी स्वातिप्रज्ञाजी
जैन विश्व भारती प्रेक्षा ध्यान केंद्र-ह्यूस्टन

श्री कनिज मुनिजी
महाराज सा

आचार्यश्री पीयूष सागर जी
खरतरगच्छ संघ

आचार्य श्री प्रद्युमन
खानपुर

आचार्यश्री जिन मनोज्ञसुरीश्वरजी महाराज
खरतरगच्छ संघ

17 सितम्बर 2025 को अभातेयुप रक्तदान का एक नया इतिहास रचने जा रही है, जिसमें 7500 से अधिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अपेक्षित है कि सभी लोग उस दिन अपनी औद्योगिक इकाईयों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, अपने संपर्क के व्यापारिक संगठनों क माध्यम से रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा कर मानवता के इस यज्ञ में अपनी आहुती प्रदान करें। कृपया रक्तदान शिविर रजिस्ट्रेशन के लिए या अन्य किसी जानकारी के लिए www.abtypmbdd.org पर लॉगिन करें।

/megablooddonationdrive | /iMdonatingBlood | mbdd_official | www.abtypmbdd.org

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

लक्ष्मण रेखाएं

आचार्य भिक्षु ने कहा – 'नहीं, न तुम्हारे पास अतीन्द्रीय ज्ञान है और न आचार्य के पास। दोनों अपने-अपने मतिश्रुत ज्ञान के आधार पर निर्णय कर रहे हो, इस स्थिति में सोचो कि एक तरफ आचार्य का चिन्तन है और एक तरफ तुम्हारा। तुम्हारी अपेक्षा आचार्य का उत्तरदायित्व अधिक है। इसलिए व्यवहार में आचार्य अपनी शुद्ध नीति से जो निर्णय दे, वह सही है और निश्चय में यथार्थ वह है जो सर्वज्ञों की दृष्टि में सही है।'

शास्त्रकारों का कथन है कि आचार्य अपनी शुद्ध नीति से जो निर्णय देते हैं उसको सम्यग् मानकर आचरण करने वाले साधु-साध्वी आराधक हैं। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्म संघ में कुछ ऐसी विलक्षण लक्ष्मण-रेखाएं खींचीं, जिनके भीतर रहने वाला साधक निर्बाधगति से साधना-पथ पर अग्रसर हो सकता है।

मर्यादा पुरुष आचार्य भिक्षु ने अनुशासन पर अत्यधिक बल दिया। अनुशासन की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन करने वाले के विरुद्ध तेरापन्थ संघ में कड़ी कार्यवाही की, जिसको निम्न घटना के माध्यम से जान सकते हैं–

संवत् १९३८ की घटना है। जयाचार्य जयपुर में विराज रहे थे। जीवन का अन्तिम वर्ष चल रहा था। संघीय व्यवस्था का संचालन मुख्यतया युवाचार्यश्री मघवा कर रहे थे। जयाचार्य का अधिकतम समय स्वाध्याय ध्यान में ही लग रहा था। सायंकालीन प्रतिक्रमण प्रारम्भ हो गया। युवाचार्यश्री आचार्यवर के पास ही बैठे थे! एक साधु (जुहारजी) शौच बाहर जंगल में गये थे। वे लौटे तब कुछ अंधेरा हो गया। युवाचार्यश्री ने कहा- 'इतनी देर कैसे की? सूर्यास्त कब का हो चुका, जल्दी आना चाहिए? भविष्य में ध्यान रखना। आज देरी की उसके लिए पांच कल्याणक (प्रायश्चित का एक माप विशेष) स्वीकार करो।'

साधु बोला-दैहिक आवश्यकता है। देरी हो गई, उसका मैं क्या करूं? मैं प्रायश्चित्त स्वीकार नहीं करूंगा।

युवाचार्यश्री मौन रहे। जयाचार्य ने ध्यान सम्पन्न कर उस साधु को बुलाया। प्रायश्चित्त स्वीकार नहीं करोगे, यह निर्णय है तुम्हारा? आचार्यवर ने पूछा। 'क्या यह अनुशासन की अवहेलना नहीं है? तुमने अनुशासन का भंग किया है, इसलिए मैं तुम्हारा संघ से संबंध-विच्छेद करता हूं।' उस साधु ने सोचा भी नहीं होगा कि अनुशासन-भंग का यह परिणाम होगा।

वस्तुतः अनुशासन एक लक्ष्मण रेखा है, जो क्रूर-वृत्तियों को भीतर प्रविष्ट होने का प्रवेश-पत्र नहीं देता। अनुशासन एक असंदीन द्वीप है जो अथाह जल- राशि में घिरे व्यक्ति को त्राण देता है।

२१वीं सदी में प्रवेश करने वाला मानव यदि वर्तमान की ज्वलन्त समस्या स्वेच्छाचारिता और अनुशासनहीनता से मुक्ति पाना चाहे तो मर्यादा संजीवनी का काम कर सकती है।

आचार्यश्री तुलसी के शब्दों में वही संघ बन सकता है जहां मर्यादाओं का सम्मान होता है, उन्होंने कहा है-

मर्यादा सद्गुरोराज्ञा, यत्र प्राणाधिकामता।
आद्रता-व्यापृता स्फीता, स संघः संघ उच्यते ।।

क्रांतिकारी आचार्य भिक्षु ने साधना के दीवट पर मर्यादा का जो दीप जलाया, उसके प्रकाश में हर साधक अपना पथ ही आलोकित नहीं करता, अपितु मंजिल तक पहुंचने का सप्रयास करता है।

जिनवाणी के प्रति समर्पित व्यक्तित्व

आचार्य भिक्षु बुद्धि, आस्था और आचारनिष्ठा के संगम के उदाहरण थे। कुछ व्यक्ति आचारनिष्ठ होते हैं पर उनमें प्रज्ञा व औत्पत्तिकी बुद्धि नहीं होती है। कुछ व्यक्ति आस्थाशील होते हैं, पर आचार-पालना में दुर्बलता का अनुभव करते हैं। कुछ व्यक्ति नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से संपन्न होते हैं पर श्रद्धा व चरित्र में निपुण नहीं होते। भिक्षु में जहां आचारनिष्ठा का अजस्र स्रोत प्रवाहित था, वहां प्रज्ञा और जिनवाणी के प्रति अटूट आस्था का साहचर्य भी था।

महामना भिक्षु कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। वे उस बुद्धि को महत्त्व नहीं देते थे जो पापकर्मों में प्रवृत्त हो। जोधपुर के राजा विजयसिंहजी के मंत्री आचार्य भिक्षु के पास आए। अनेक प्रश्न पूछे। स्वामीजी ने उन्हें प्रश्नों का समाधान दिया। सन्तोषजनक समाधान पाकर मंत्री ने कहा- 'आपको बुद्धि तो ऐसी है कि आप किसी राजा के मंत्री होते तो अनेक देशों का राज्य उस राजा के अधीन कर देते।'

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल
अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

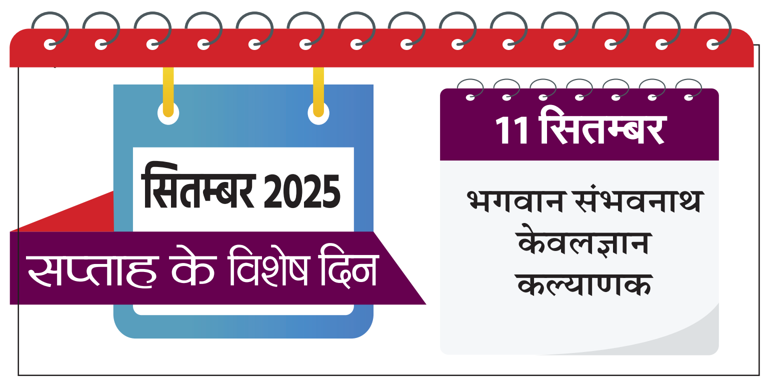

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री मंगतमलजी (रतनगढ़) दीक्षा क्रमांक 409

मुनिश्री ने लगभग 28 वर्ष तप जप स्वाध्याय के द्वारा अपने संयमी जीवन को निखारा। आपके द्वारा की गई तपस्या की तालिका इस प्रकार है– उपवास/1131, 2/87, 3/24, 4/22, 5/15, 6/4, 7/2, 8/3, 9/2, 10/1, 11/1, 16/1 तपस्या के कुल दिन– 1657 जिनके 4 वर्ष 7 महिने 7 दिन होते है। अन्त में आपने 11 दिन का चौविहार संलेखना तप, तीन दिन का चौविहार अनशन, कुल 14 दिन से समाधि पूर्वक पंडित–मरण प्राप्त किया।

– साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
01 सितम्बर - 07 सितम्बर, 2025

रक्षाबंधन कार्यशाला का हुआ आयोजन

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र संगान से हुआ।

संस्कारक मनोज कोचर, ऋषभ दुधोड़िया और ऋषभ सिपानी ने जैन मंत्रोच्चार के साथ कार्यशाला संपन्न कराई। उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया। संस्कारकों ने रक्षाबंधन का महत्व बताते हुए जैन संस्कार विधि से इसे सम्पादित कराने का तरीका समझाया और 11 भाई-बहन के जोड़ों द्वारा डेमो प्रस्तुत किया। उपस्थित जनों को मंगल मंत्र सुनाए गए और जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी, निवर्तमान अध्यक्ष गगनदीप बैद, पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य सहित श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में जयप्रकाश बांठिया, ऋषभ सिपानी, नवीन सेठिया और विशाल गिड़िया का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री एवं जैन संस्कार विधि के पर्यवेक्षक प्रवीण बैंगाणी ने किया। अंत में उपस्थित सभी का आभार जैन संस्कार विधि के संयोजक नीरज बांठिया ने व्यक्त किया।

अध्यात्म और विज्ञान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद द्वारा तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी, सिकंदराबाद में 'श्रीचरणों में–अध्यात्म और विज्ञान' विषय पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत सुराणा, विरेंद्र घोषल, अर्हम बेंगानी और निखिल कोटेचा ने मंगलाचरण के साथ किया। साध्वीश्री ने अपने प्रवचन में अध्यात्म और विज्ञान के गूढ़ संबंधों को सरल शब्दों में समझाया और जीवन में संतुलन एवं सकारात्मकता लाने का संदेश दिया।

साथ ही 'श्रीचरणों में' के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पदाधिकारियों ने मंच से स्वागत भाषण दिया। स्थानीय टीम से अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने स्वागत भाषण में TPF की विशेषता बताई। राष्ट्रीय टीम से मोहित बैद ने भी अपने स्वागत भाषण में TPF की बड़ी उपलब्धियाँ बताईं। बड़ी संख्या में श्रावक एवं श्राविकाओं ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम के संयोजक सुयश नौलक्खा और विक्रम सेखानी ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अथक प्रयास किया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के मंत्री निखिल कोटेचा ने साध्वीश्री जी, उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं एवं स्वयंसेवकों का आभार व्यक्त किया, जिनके सहयोग से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

पैंसठिया छंद अनुष्ठान

लूणकरणसर।

तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी ललितकला जी के सान्निध्य में पैंसठिया छंद अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

साध्वी ललितकला जी ने नवकार मंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात साध्वी योगप्रभा जी ने पैंसठिया छंद अनुष्ठान के बारे में उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज को महत्वपूर्ण जानकारी देने के बाद छंद का उच्चारण करवाया।

साध्वी ललितकला जी ने बताया कि इस छंद के नियमित रूप से जाप करने की प्रेरणा दी। अनुष्ठान में 21 जोड़े उपस्थित थे तथा तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद के पदाधिकारी और समस्त श्रावक-श्राविका समाज ने भाग लिया।

श्री भिक्षु जीवन दर्शन प्रतियोगिता का रोचक हुआ आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में श्री भिक्षु जीवन दर्शन प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद द्वारा भिक्षु विहार में किया गया।

इस प्रतियोगिता में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से दस प्रतियोगियों को भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रत्येक प्रतियोगी के लिए दो लाइफलाइन के साथ दस प्रश्नों को मौखिक पूछने का क्रम रखा गया। सभी प्रश्नों के सही जवाब देने वाले विजेता प्रतियोगी रहे — ऋषभ दुगड़, मंजू दुगड़, हेमा दुगड़, सरोज दुगड़ व पवन दुगड़।

इस अवसर पर आशीर्वचन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा — 'जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों में एक स्वर्णिम नाम है आचार्य भिक्षु। वे सत्य के पुजारी थे और भगवान महावीर वाणी के प्रति पूर्ण आस्थावान थे। उनके जीवन दर्शन से श्रद्धालुओं को नई प्रेरणा प्राप्त होती है। प्रतियोगिता के माध्यम से उनके जीवन दर्शन को लोगों तक पहुँचाने का कार्य महत्वपूर्ण है। प्रश्नोत्तरयुक्त यह प्रतियोगिता ज्ञानवृद्धि का माध्यम बने।'

मुनि परमानंद जी ने सभी प्रतियोगियों से प्रश्न पूछे। इस अवसर पर स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष राजीव बोथरा ने दिया तथा आभार ज्ञापन मंत्री सिद्धार्थी दुधेड़िया ने किया। विजेताओं एवं प्रतिभागियों को तेयुप द्वारा पुरस्कृत किया गया।

प्रतियोगिता के संयोजक नैतिक भादानी एवं सह संयोजक हार्दिक सिंघी थे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित रहे।

दीक्षार्थी मंगल भावना समारोह का आयोजन

कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी मंगल भावना समारोह का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में किया गया।

इस अवसर पर भुवनेश्वर से आए दीक्षार्थी मोहक बेताला व पूर्वांचल कोलकाता क्षेत्र के दीक्षार्थी अर्हम सिंघी मंच पर उपस्थित रहे। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा – दीक्षा अध्यात्म का सुनहरा अध्याय है। दीक्षा आत्मशुद्धि का त्योहार है।

यह मानव जीवन की सार्थकता का बेहतरीन उपहार है। दीक्षा जीवन की ज्योति व मुकुट है। दीक्षा आत्म जागरण का अनमोल अवसर है। दीक्षा अमावस्या की स्याह रातों में व्यक्ति को पथ दिखलाने वाली आलोक शक्ति है। चौराहे पर खड़े व्यक्ति को मंजिल तक पहुँचाने वाला मार्ग है मुनि दीक्षा। दीक्षा बाह्य भाव से आत्मभाव में स्थित होने का विशिष्ट पथ है।

उन्होंने आगे कहा – तेरापंथ में दीक्षा का अर्थ है अहंकार और ममकार का विसर्जन, गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण। भुवनेश्वर का मुमुक्षु मोहक बेताला दीक्षा लेने जा रहा है, बहुत-बहुत मंगलकामना।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणालकुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। दीक्षार्थी मोहक बेताला ने वैराग्य प्राप्ति के इतिहास को बतलाते हुए दीक्षार्थी मंगल भावना के अवसर पर कोई-न-कोई त्याग ग्रहण करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर दीक्षार्थी अर्हम सिंघी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय कुमार सिंघी, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष राजीव बोथरा, महिला मंडल की अध्यक्षा बबीता तातेड़, प्रखर वक्ता प्रकाश चंडालिया, महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल, सत्य साधक विजयसिंह सेठिया, विमल भंडारी, भुवनेश्वर से समागत प्रकाशचंद बेताला, झलक बेताला ने भी मंगल भावना के भाव व्यक्त किए।

छोटी खाटू परिषद की तरफ से महावीर बजाज, जैन कार्यवाहिनी के संयोजक पंकज दुधोड़िया ने दीक्षार्थी के प्रति मंगल भाव व्यक्त किए।

आभार ज्ञापन मंत्री पंकज डोसी व कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद व सहसंचालन आलोक बरमेचा ने किया।

सभा द्वारा दीक्षार्थी का सम्मान किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

पर्यावरण जागरूकता अभियान सफलतापूर्वक संपन्न

दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में एवं अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम शहीद मंगल पांडे सर्वोदय बाल विद्यालय, मॉडल स्कूल, विवेक विहार फेस-1 में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

कार्यक्रम प्रधानाचार्य आलोक कुमार के मार्गदर्शन में सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। उन्होंने स्वयं उपस्थित होकर पौधारोपण किया और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

इस कार्यक्रम में स्कूल के अध्यापकगण, अध्यापिकाएँ एवं छात्र-छात्राओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य आलोक कुमार, अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की कार्यसमिति सदस्य एवं समिति के पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ सहित अनेक गणमान्य नागरिक, शिक्षकगण एवं विद्यार्थी गण उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण को लेकर विद्यार्थियों में विशेष जागरूकता देखी गई।

सभी ने मिलकर पौधे लगाए और 'वृक्ष लगाओ – जीवन बचाओ' का संकल्प लिया। अंत में अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली की ओर से सभी प्रतिभागियों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह का भव्य हुआ आयोजन

कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में मासखमण तप अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कोलकाता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में किया गया।

मासखमण तप करने वाले सजोड़े तपस्वी–जुगराज बैद, प्रेमलता बैद, अनूप गंग, सुजानी देवी पगारिया, उर्मिला गुलगुलिया, सुमन गोयल, संपत छाजेड़ व सुनीता देवी दुधेड़िया के नाम उल्लेखनीय हैं।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा–जैन साधना पद्धति में तपोयोग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तप वह अग्नि है जो कर्म रूपी कचरे को भस्म करने में समर्थ है।

तप आंतरिक शुद्धि का सार्थक उपक्रम है। तप अध्यात्म का नवनीत है–अतीत का क्षयोपशम, वर्तमान का विराग और भविष्य का दर्पण। तपस्या वह रसायन है जिसके द्वारा शरीर और मन का संतुलन बना रहता है। रसनेन्द्रिय के संयम से ऊर्जा का संचय होता है, विषय तृष्णा के कड़े ताप शांत हो जाते हैं। वृत्ति शोधन के साथ शरीर अनेक प्रकार की व्याधि से मुक्त होकर स्वस्थता की अनुभूति करता है। तप आत्मा का उज्ज्वल पक्ष व अमृत का प्याला है।

मुनिश्री ने आगे कहा–वृहत्तर कोलकाता में एक साथ आठ भाई-बहनों का मासखमण तप सम्पन्न होना जा रहा है। मासखमण तप करने वाले सभी तपस्वियों ने अद्भुत मनोबल का परिचय दिया है। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कोलकाता-पूर्वांचल) ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय सिंघी ने दिया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन उपाध्यक्ष कमल सुराणा ने किया और तप अभिनंदन पत्र का वाचन मुख्य न्यासी बाबूलाल गंग ने किया।

तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष राजीव बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा बबीता तातेड़, TPF कोलकाता सभा के पूर्व अध्यक्ष अशोक गुलगुलिया, अध्यक्ष अजय भंसाली, इचलकरंजी से पधारे जवाहर लाल भंसाली, खींवकरण बैद, कमल किशोर पगारिया, कंवरलाल सेठिया, अजय गोयल, सौरभ-शिवानी गुलगुलिया, अंकुश छाजेड़, सरला गंग ने तप अनुमोदना में अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथ युवक परिषद, सभा सदस्य, लिलुआ सभा, स्वर लहरी के सदस्यों ने समूह गीतों की प्रस्तुति से तप अनुमोदना की। आभार ज्ञापन सभा के कोषाध्यक्ष जयसिंह बरड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी व हसमुख मुथा ने किया। इस अवसर पर वृहत्तर कोलकाता से बड़ी संख्या में श्रद्धालु गण उपस्थित रहे।

प्रथम लक्ष्य हो गुरु चरणों में सर्वात्मना समर्पण

सिटीलाइट, सूरत।

तेरापंथ भवन सिटीलाईट में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आयोजित दीक्षार्थी मुमुक्षु मनोज संकलेचा, मुमुक्षु कल्प मेहता, मुमुक्षु विशाल परिख और मुमुक्षु राजुल खटेड़ के मंगल भावना समारोह में उद्बोधन प्रदान करते हुए प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जिस उत्साह, उमंग और वैराग्य भाव के साथ संयम पथ पर प्रस्थान हो रहा है, उसका सदा संवर्धन होता रहे।

हमें वीतराग प्रभु महावीर का शासन, भिक्षु संघ और वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमणजी का सक्षम नेतृत्व सौभाग्य से प्राप्त हुआ है। गुरु चरणों में सर्वात्मना समर्पण ही हमारे जीवन का प्रथम लक्ष्य होना चाहिए। गुरु हमारे परम रक्षक हैं।

प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि सभी दीक्षार्थी मुमुक्षु वैराग्य दीप को सदा प्रज्वलित रखें। आत्मदर्शन की दिशा में अपनी शक्ति का यथासंभव नियोजन करते रहें, संयम समरांगण में विजय का वरण करते रहें तथा जागृत रहकर सफलता के सोपान पर आरोहण करते रहें। पारिवारिक जन, जिन्होंने इनको संयम मार्ग पर प्रवृत्त होने में सहयोग दिया है, सभी साधुवाद के पात्र हैं।

तेरापंथ सभा ने मंगल संगान किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर, तेयुप अध्यक्ष नमन मड़तवाल, महिला मंडल अध्यक्षा प्रतीक्षा बोथरा, सकलेचा परिवार की ओर से सुरेंद्र सकलेचा, परिख परिवार से समकित परिख, खटेड़ परिवार से अनिल खटेड़ एवं मेहता परिवार से मुमुक्षु कल्प की मां रेशमा बहन, दीया, भाई हर्ष और कवन ने शुभकामनाएं दीं।

तेयुप सदस्यों ने अभिनंदन गीत प्रस्तुत किया तथा महिला मंडल ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

जे.टी.एन परिवार से पवन फुलफगर, मेनेजिंग ट्रस्टी बाबूलाल भोगर ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। मुमुक्षुओं का परिचय ज्ञानशाला संयोजक राहुल खेखावत, टीपीएफ अध्यक्ष सुमन सुरवानी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष रतनलाल भलावत एवं ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका मनीष सेठिया ने दिया।

साध्वी वृंद ने 'शुभास्तु ते पन्थान' गीत का संगान किया। साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने अध्यात्म विकास की कामना की।

मुमुक्षु मनोज, मुमुक्षु कल्प, मुमुक्षु विशाल और राजुल खटेड़ ने अपने आत्मोदगार व्यक्त किए और सम्पूर्ण परिषद से क्षमा याचना की। किशोर मंडल एवं कन्यामंडल ने दीक्षार्थियों को मंगल तिलक कर आध्यात्मिक आरती का भव्य दृश्य प्रस्तुत किया।

बोलती किताब

पथ चुनें पर कौन-सा

प्रत्येक व्यक्ति के लिए चिन्तनीय है—वह कौन सा काम है, जिसे मैं कर सकता हूं पर नहीं करता । मैं व्याख्यान सुन सकता हूं पर सुनता नहीं हूं । मैं स्वाध्याय कर सकता हूं पर करता नहीं हूं । मैं सामायिक कर सकता हूं पर करता नहीं हूं । मैं माला फेर सकता हूं पर फेरता नहीं हूं । क्यों नहीं करता मनुष्य ? इसलिए कि कार्य-अकार्य का विवेक नहीं है । जिसमें कार्य-अकार्य का विवेक जाग्रत् है, मानना चाहिए—उस व्यक्ति में तेजोलेश्या का विकास हुआ है, उसके आभामण्डल में पीला रंग प्रधान बना हुआ है ।

विनय की परम्परा, सहन करने की परम्परा का विकास जरूरी है । अनेक बार लोग पूछते हैं-तेरापंथ का विकास क्यों हुआ ? क्यों हो रहा है ? मैंने कहा —'भाई ! तेरापंथ का साधु-साध्वी पद्मलेश्या के भावों में जीता है । जो पद्मलेश्या की भावधारा में जीएगा, उसके विकास को कोई रोक नहीं पाएगा ।' ह्रास किसका होता है ? जो बुरी भावधारा में जीता है, वह नीचे गिरता चला जाता है । जो अच्छी भावधारा में जीता है, वह ऊपर उठता चला जाता है, विकास करता चला जाता है ।

भारतीय चिन्तन परम्परा में मांगना सबसे ज्यादा लज्जा का काम रहा है । आदमी भूखा रह जाता है पर हाथ नहीं पसारता । इसीलिए याचना को मुनि के लिए एक परीषह बतलाया गया है । उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया—पाणि नो सुपसारए— किसी के सामने हाथ फैलाना सरल काम नहीं है । दातृयाचकयोर्भेदः कराभ्यामेव सूचितः—हाथ बता देते हैं कि कौन हाथ फैला कर लेने वाला है और कौन देने वाला । हाथ की मुद्रा बता देती है कि अमुक देने वाला है और अमुक लेने वाला । बड़ा कठिन काम है हाथ फैलाना ।

जो व्यक्ति दूसरों की बात सुन कर उलझ जाता है, वह कभी सुख-शांति से रह नहीं सकता । इसलिए उपेक्षा को समझना बहुत जरूरी है । यदि आप शांति से रहना चाहते हैं, यदि आप पारिवारिक झगड़ों, कलहों से मुक्त रहना चाहते हैं, यदि संस्थागत संगठनात्मक झगड़ों से मुक्त रहना चाहते हैं तो सबसे अच्छा उपाय है—उपेक्षा करना सीखो, औदासीन्य का पाठ पढ़ो, मध्यस्थ रहना सीखो । इससे काफी समस्या हल हो जाएगी । जो सचमुच उपेक्षा करना जानता है, वह न कभी गुस्से में आता है, न झल्लाता है, न गालियां बकता है । कुछ भी नहीं करता । वह अपने व्यवहार से ऋणात्मक को धनात्मक बना देता है, नकारात्मक को सकारात्मक बना देता है और अपनी शांति को भंग भी नहीं होने देता ।।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

बारह व्रत कार्यशाला का समायोजन

संगरूर।

तेरापंथ भवन संगरूर में साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सानिध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। स्थानीय पंजाबी भाई-बहनों ने छोटे-छोटे व्रतों को समझकर उन्हें स्वीकार करने का उत्साह प्रकट किया। अपने उद्बोधन में साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति की सामर्थ्य और अर्हता अलग-अलग होती है। हर व्यक्ति की शक्ति और आस्था में भी भिन्नता होती है। इसी कारण भगवान महावीर ने अध्यात्म साधना को दो भागों में विभक्त किया – महाव्रत और अणुव्रत। जिनमें विशेष शक्ति होती है, वे महाव्रत स्वीकार कर अनगार धर्म की साधना करते हैं। जबकि जो साधु बनने की क्षमता नहीं रखते, वे अहिंसा, सत्य आदि अणुव्रतों के छोटे-छोटे नियमों को ग्रहण कर 'व्रत दीक्षा' स्वीकार करते हैं।

साध्वीश्री ने बताया कि व्रत दीक्षा स्वीकार करने से समुद्र जितना पाप भी कटोरे में समाहित हो जाता है। आत्म-नियंत्रण की एक सुंदर प्रक्रिया है व्रत दीक्षा, जिससे आत्मा का बड़ा हित होता है और संवर की साधना स्वतः सिद्ध हो जाती है। उन्होंने प्रत्येक व्रत को सरल भाषा में विस्तारपूर्वक समझाया। स्थानीय युवक परिषद ने 'विजय गीत' के साथ कार्यक्रम का मंगलाचरण किया।

बंधन और मुक्ति हमारे ही भीतर है : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
19 अगस्त, 2025

अध्यात्म जगत के महासूर्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि यह भावों का जगत है। आसक्ति व मोह के कारण व्यक्ति के भीतर अनेक भाव उभरते हैं। भावों से व्यक्ति अधोगति को प्राप्त हो सकता है तो भावों से व्यक्ति मोक्ष की दिशा में भी प्रस्थान कर सकता है। भावों से बंधन और भावों से व्यक्ति मुक्ति की ओर अग्रसर हो सकता है। आसक्ति और मोह सघन होते हैं, हिंसा-झूठ का प्रयोग होता है, 18 पापों का उपभोग होता है तो व्यक्ति अधोगति की ओर चला जाता है। 18 पापों का सेवन है तो आत्मा बंधन में जाती है। 18 पापों का विरमण है तो आत्मा मोक्ष की ओर अग्रसर होती है।

आसक्ति, मोह, पाप का सेवन—यह सब बंधन का कार्य है। संवर और निर्जरा की साधना हमें मोक्ष की ओर आगे बढ़ाने वाली है। एक मिथ्यात्वी जीव भी तपस्या करता है तो उसको भी थोड़ा कुछ लाभ मिलता है। अभव्य मिथ्यात्वी कितनी भी तपस्या कर ले, मोक्ष में कभी जा नहीं पाएगा। पुण्य का बंध हो सकता है, नव ग्रैवेयक तक चला जाए, परन्तु मोक्ष में कभी भी नहीं जा सकता। आश्रव हमें बंधन की ओर तथा संवर तथा निर्जरा हमें मोक्ष की ओर ले जाने वाले हैं। इसलिए हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापों से, मोह, आसक्ति से बचने का प्रयास रखें।

पर्युषण के दिनों में धर्म-ध्यान, तपस्या, सामायिक आदि में ज्यादा समय लगाना चाहिए, मन लगाना चाहिए। शाम को प्रतिक्रमण करना चाहिए। किशोर, बच्चे आदि को भी पर्युषण में कम से कम एक सामायिक तो करनी ही चाहिए। संवत्सरी के दिन उपवास का प्रयास करना चाहिए।

शास्त्र में कहा गया है कि बंधन-मुक्ति तुम्हारे भीतर ही है। आसक्ति को कम करें, मोह, बंधन, कषायों को छोड़ेंगे तो हमेशा के लिए मुक्ति मिल जाएगी।

मंगल प्रवचन के उपरान्त गुरुदेव ने तेरापंथ प्रबोध आख्यानमाला के क्रम को आगे बढ़ाया। मुनि राजकुमारजी ने गीत के माध्यम से तपस्या की प्रेरणा दी एवं मुनि मदन कुमारजी ने तपस्या की जानकारी दी। महाप्रज्ञ स्कूल-जगराओ के विद्यार्थियों ने आचार्यश्री के समक्ष गीत की प्रस्तुति दी। आचार्यश्री ने विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने लिया।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

सिटी लाइट, सूरत।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन एवं तेरापंथ महिला मंडल सूरत के आयोजन में 'हैप्पी एंड हेल्दी एजिंग' विषयक चित्त समाधि शिविर में विशाल परिषद को संबोधित करते हुए प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि चित्त समाधि की प्राप्ति व्यक्ति के अपने हाथों में है। जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों और उतार-चढ़ाव को साहसपूर्वक स्वीकार करें और आत्मानंद का अनुभव करते रहें। प्रतिक्रियाओं से दूर रहें, जीवन को योजनाबद्धता से जिएं। समय के साथ अपने दायित्वों को भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करते रहें और उन्हें आगे बढ़ने के लिए स्थान दें। वृद्धावस्था को बोझ न समझें, परिवार को उनका प्रबल आधार मिलता है। आवश्यकता है कि परिवार के सदस्य बुजुर्गों का सहारा बनें। उनका आशीर्वाद और प्रेरणा ही सफलता का राजमार्ग है।

साध्वीश्री ने कहा कि चित्त समाधि का अर्थ है परमानंद। परमानंद और प्रसन्नता के लिए झरने की तरह निर्मल, गतिशील और उपयोगी बने रहें। साध्वीश्री के महामंत्रोच्चार के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण का संगान किया।

अध्यक्षा प्रतीक्षा बोथरा ने स्वागत वक्तव्य में कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि साध्वीश्री के मार्गदर्शन से सभी कार्य सहजता से संपन्न हो रहे हैं। उन्होंने शिविर के आयोजन में श्रम, समय और नियोजन देने वाली संयोजिका रीना राठौड़, शिल्पा मादरेचा तथा सहसंयोजिका निशा बैद, संतोष बैंगानी, बाला बाफना और रचना सोलंकी के प्रयासों की सराहना की।

इस शिविर में साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने कायोत्सर्ग कराया, साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने तात्विक ज्ञान एवं मुद्रा विज्ञान पर प्रकाश डाला, साध्वी डॉ. राजुलप्रभा जी ने शिविरार्थियों से अपने जीवन अनुभव साझा किए।

साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने 'सात सितारे' के रूप में भावी दिनचर्या कैसी हो, इस पर प्रशिक्षण दिया। ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका मनीषा सेठिया ने रोचक खेलों से वातावरण सौम्य बनाया और मोटिवेटर मेघना सुराणा ने विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया।

अंतिम सत्र 'खोलो अनुभवों का खजाना' में शिविरार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए और जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

फरीदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद फरीदाबाद द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, फरीदाबाद में किया गया। कार्यक्रम का आयोजन शासनश्री मुनि विमल कुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

कार्यशाला का संचालन संस्कारक जितेंद्र लूनिया एवं मुकेश जैन बोथरा ने किया।

प्रारंभ में नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ मंगलाचरण हुआ तथा मंगलभावना पत्र की स्थापना की गई। कार्यक्रम में रक्षाबंधन पर्व को जैन संस्कार विधि के अनुरूप किस प्रकार मनाया जाए, इसकी संपूर्ण प्रक्रिया मंत्रोच्चार सहित समाजजन को समझाई गई।

जैन विद्या परीक्षा के पारितोषिक वितरण

आमेट।

साध्वी सम्यक प्रभाजी के सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षा के प्रमाण पत्र व पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

साध्वी सम्यक प्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन विद्या की परीक्षा, जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के सिद्धांतों एवं जैन दर्शन को जानने, समझने एवं ज्ञान के विकास का सशक्त माध्यम है। भावी पीढ़ी को इन परीक्षाओं से जुड़ना चाहिए। जैन विद्या परीक्षा से नॉलेज पावर बढ़ता है।

जैन विद्या मेवाड़ आंचलिक संयोजक मनोहर लाल दुग्गड, आमेट केंद्र व्यवस्थापक देवेंद्र पितलिया, सहकेंद्र व्यवस्थापक विपुल पितलिया – सभी के अथक प्रयास से केंद्र द्वारा निर्देशित जैन विद्या परीक्षा विगत 4 वर्षों से ऑनलाइन माध्यम से आयोजित हो रही है, जिसमें वर्ष 2024 की परीक्षा में आमेट से कुल 112 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें से 84 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए।

प्रायोजक महेंद्र कुमार–संजय कुमार बोहरा द्वारा पारितोषिक दिए गए। जैन विद्या परीक्षा 2024 में आमेट सभा व केंद्र व्यवस्थापक के सक्रिय सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया। गत वर्ष भाग-9 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों में उमा हिरण, वैशाली हिरण, मंजू हिरण, खुशबू पामेचा, अनीता दुग्गड रहे। वहीं भाग-1 व 2 राष्ट्रीय स्तर पर उत्तीर्ण तृतीय स्थान पर सुदीप छाजेड़, ऋषभ डांगी रहे।

सम्यक दर्शन कार्यशाला 2024 में देश-विदेश स्तर पर परीक्षार्थियों में टॉप-100 में प्राची कोठारी का 91वां स्थान व खुशबू पामेचा का 88वां स्थान प्राप्त करने पर गुरुदेव के समक्ष मोमेंटो प्रदान किया गया।

प्रमाण पत्र तेरापंथ सभा अध्यक्ष यशवंत कुमार चोरडिया, महिला मंडल मंत्री संगीता चंडालिया आदि ने वितरण किए।

सरदारगढ़ से पधारी उपासिका शांताबाई ने अपने विचार व्यक्त किए। श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन व कार्यक्रम का संयोजन देवेंद्र पितलिया ने किया। स्थानीय सभा द्वारा प्रायोजक व जैन विद्या व्यवस्थापक का उपरणा व साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

धर्मक्रांति के सहयात्री

धर्मक्रांति के समय बारह साधु संत भीखणजी के साथ थे—

१. मुनि श्री थिरपालजी	२. मुनि श्री फतेहचंदजी	३. मुनि श्री हरनाथजी	४. मुनि श्री टोकरजी
५. मुनि श्री भारमलजी	६. मुनि श्री वीरभाणजी	७. मुनि श्री लिखमीचंदजी	८. मुनि श्री बखतरामजी
९. मुनि श्री गुलाबजी	१०. मुनि श्री भारमलजी (द्वितीय)	११. मुनि श्री रूपचन्दजी	१२. मुनि श्री पेमजी

संत भीखणजी ने अपने सहयात्रियों के साथ तत्व-चर्चा की। विचारों का ताल-मेल बिठाया। चातुर्मास सामने आ गया। आठ साधुओं के दो सिंघाड़ों में दो स्थानों पर चातुर्मास करवाये। विहार के समय आपने सबको निर्देश दिया–आषाढ़-शुक्ला पूर्णिमा के दिन तेरापंथ की दीक्षा स्वीकार करेंगे। चातुर्मास के बाद श्रद्धा और आचार के विषय में पुनः चिन्तन करेंगे। यदि विचार मिल गए तो सब साथ रहेंगे और यदि विचारों में अन्तर रहा तो हमारा सह-सम्बन्ध नहीं हो सकेगा।

आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा का दिन, केलवा गांव, भगवान चन्द्रप्रभ का मन्दिर, अंधेरी ओरी, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण और क्षमायाचना के बाद पूर्णिमा की चांदनी से धवलित आकाश, पुण्य वेला और शुभ मुहूर्त्त में आचार्य भिक्षु ने अर्हत् की आज्ञा को शिरोधार्य कर सिद्धों के साक्ष्य से अपने सहवर्ती चार साधुओं के साथ तेरापंथ की दीक्षा स्वीकार की। ठीक उसी समय शेष आठ साधु भी अपने-अपने स्थान पर तेरापंथ में दीक्षित हो गए। उस वर्ष वर्षा भी अच्छी थी, फसल भी बहुत अच्छी हुई।

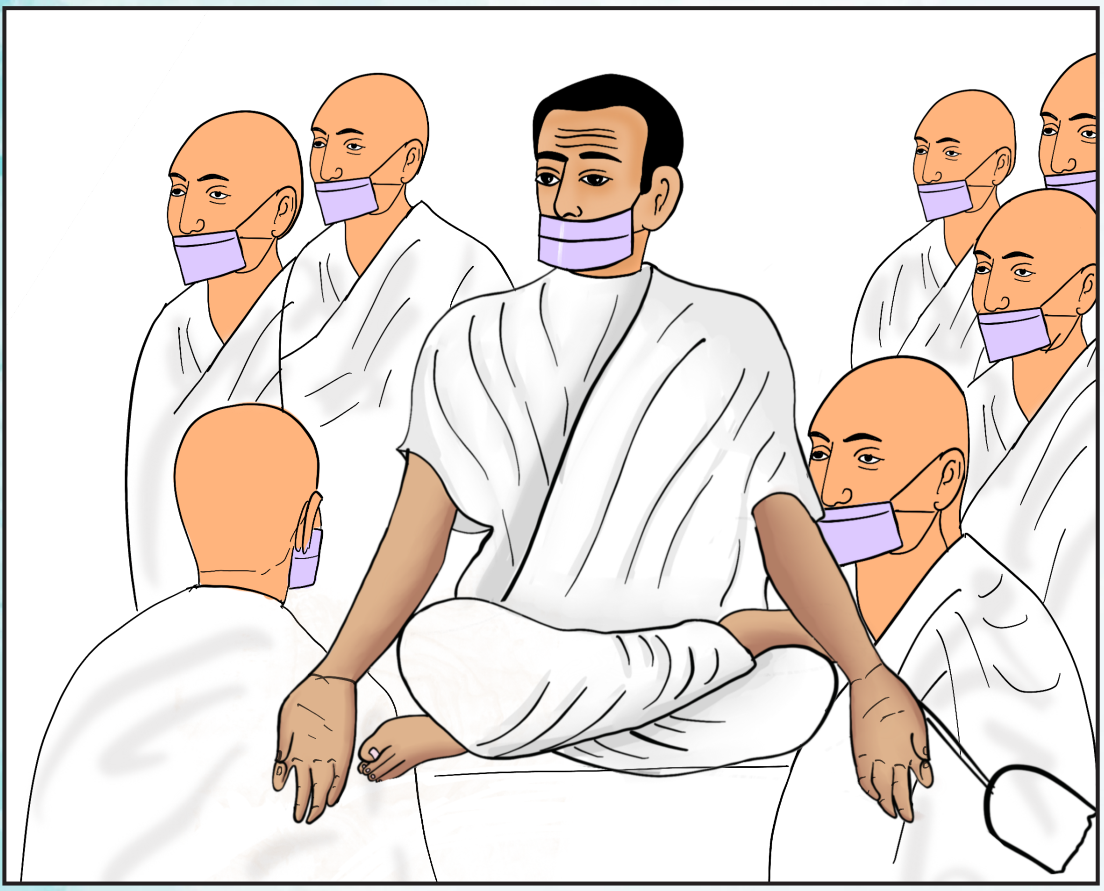

भिक्षु की कहानी

जयाचार्य की ज़ुबानी

'काफरला' गांव में साधु गोचरी गए। एक जाटनी के घर में धोवन पानी था, पर वह साधुओं को दे नहीं रही थी। उसने कहा- 'जैसा दिया जाता है, वैसा मिलता है। मैं धोवन पानी नहीं पी सकती। (इसलिए इसे नहीं दे सकती।)

साधुओं ने आकर स्वामीजी से कहा-एक जाटनी के घर में धोवन पानी बहुत है किंतु वह दे नहीं रही है तब स्वामीजी वहां पधारे और बहिन से कहा-'धोवन का पानी दो।'

तब उस बहिन ने कहा- 'जैसा दिया जाता है वैसा मिलता है और मुझसे धोवन पानी पीया नहीं जाता।' (इसलिए इसे नहीं दे सकती।)

तब स्वामीजी ने कहा-'गाय को घास डाली जाती है और वह दूध देती है। ऐसे ही साधुओं को धोवन पानी देने से सुख मिलता है।'

यह सुन कर उसने कहा- 'लो महाराज!'

स्वामीजी धोवन पानी ले अपने स्थान पर आ गए।

जानें तेरापंथ को पहचानें स्वयं को

अपेक्षित पूर्व तैयारी बारह व्रत स्वीकारने की

किसान बीज बोने से पहले भूमि को तैयार करता है। वैसे ही बारह व्रतों की स्वीकारने से पूर्व तैयारी अपेक्षित है। श्रावक श्रद्धालु और तत्व को जानने वाला होता है। आचार्य श्री भिक्षु ने कहा कि श्रावक और केवली की श्रद्धा एक होती है, स्पर्शना अर्थत् आचरण में अन्तर होता है। श्रद्धा की दृष्टि से श्रावक का कितना ऊंचा दर्जा है, यह विशेष रूप से समझने की बात है। श्रावक को बारह व्रतों का भलीभांति ज्ञान होना चाहिये। बारह व्रत संवर है या निर्जरा? बारह व्रत जीव है या अजीव ? बारह व्रत कौन सा भाव और कौन सी आत्मा ? बारह व्रत सावद्य या निरवद्य ? व्रत धारण का लाभ क्या है ? इन जैसे प्रश्नों कोसमाहितकरहीबारहव्रतोंकेस्वीकरणकीअर्हताप्राप्तकीजासकतीहै।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

क्या आप जानते हैं ?

पानी को फिल्टर करने की प्रक्रिया में यदि रासायनिक द्रव्यों का समुचित प्रयोग होता है तो उस पानी को अचित्त माना जाता है। फिटकरी से शोधित पानी अचित्त माना जाता है।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह भिक्षु अष्टकम कंठस्थ करने का प्रयास करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 सितम्बर - 07 सितम्बर, 2025

अनुशासन व्यवस्था के सुंदर सृजनकार थे श्रीमद् जयाचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

महासाधक की सन्निधि में हुआ पर्वाधिराज पर्युषण का आगाज

कोबा, गांधीनगर।
20 अगस्त, 2025

साधना के शिखर पुरुष भगवान महावीर के प्रतिनिधि, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में महान आध्यात्मिक पर्व, पर्युषण महापर्व का शुभारंभ हुआ। आचार्यश्री ने अपार जन समूह को पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि परमाराध्य भगवान महावीर लोकोत्तम थे। मंगल पाठ में अर्हत्, सिद्ध, साधु और केवली प्रज्ञप्त धर्म को लोकोत्तम कहा गया है। अर्हत् लोकोत्तम होते हैं और प्रभु महावीर भी अर्हत् थे। वर्तमान जैन शासन भगवान महावीर से संबद्ध है। इस जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र की इस अवसर्पिणी के भगवान महावीर चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर हुए। भगवान महावीर के शासन में दिगंबर और श्वेतांबर दो परम्पराएं हैं। पर्युषण और दशलक्षण मोटा-मोटी आपस में कनेक्टेड हैं। आज से जैन श्वेतांबर तेरापंथ की परंपरा में पर्युषण पर्व प्रारंभ हो गया है। भगवती संवत्सरी से पूर्ववर्ती एक सप्ताह, और भगवती संवत्सरी को जोड़ देने पर अष्टान्हिक आराधना का यह कालमान होता है।

आज का दिन भाद्रव कृष्ण द्वादशी पर्युषण के प्रथम दिन के साथ-साथ परम पूज्य प्रज्ञापुरुष श्रीमज्जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस भी है। जयपुर में उनका महाप्रयाण हुआ। श्रीमज्जयाचार्य विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी थे। वे तत्ववेत्ता थे, उनका शास्त्रीय ज्ञान काफी निर्मल था। उनके उपलब्ध ग्रंथ झीणी चर्चा, भ्रम विध्वंसनम्, प्रश्नोत्तर तत्त्व बोध, भगवती जोड़ आदि विशिष्ट ग्रंथ हैं। ज्ञानवेत्ता के साथ-साथ वे अध्यात्मवेत्ता, अध्यात्म साधक भी थे। चौबीसी जैसे छोटे ग्रंथ में भी उन्होंने साधना, तेरापंथ की मान्यता, तत्त्वज्ञान, अमूर्तिपूजा आदि को सन्निहित किया है। आराधना भी सुंदर ग्रंथ है।

श्रीमज्जयाचार्य अनुशासन व्यवस्था के सुंदर सृजनकार और निर्माता थे। उनके आचार्यकाल में तेरापंथ में एक नया उन्मेष आया था। तेरापंथ की प्रथम शताब्दी की संपन्नता जयाचार्य के समय और दूसरी शताब्दी की संपन्नता आचार्य तुलसी के समय में हुई। श्रीमज्जयाचार्य और आचार्य तुलसी में भी समानताएं थीं। दोनों ने राजस्थानी भाषा में आख्यानों की रचना की। दोनों ने संघीय व्यवस्थाओं में कुछ परिवर्तन किए थे। जयाचार्य एक महान साहित्यकार थे। राजस्थानी भाषा में संभवतः पिछले पांच सौ वर्षों में इतनी रचनाएं किसी जैनाचार्य ने नहीं की हैं।

खाद्य संयम दिवस के अवसर पर पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जितना संभव हो सके तपस्या करें, खाने में संयम रखने का प्रयास करें। अनेक रूपों में खाद्य संयम किया जा सकता है। जिसके प्रति ज्यादा आकर्षण हो, उसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने भी साधु-साध्वियों को चातुर्मास काल में नवकारसी की प्रेरणा प्रदान की और कहा कि व्यक्ति को खाद्य संयम की दिशा में भी आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

इससे पूर्व मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी ने गीतिका के माध्यम से जयाचार्य के प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति दी। पर्युषण के संदर्भ में मुख्यमुनि प्रवर ने कहा कि मनुष्य विवेक संपन्न प्राणी है, अपने हित-अहित को भली प्रकार समझता है। जब व्यक्ति आत्मस्थ हो जाता है तो वह सुख और आनंद की स्थिति में पहुँच जाता है, किन्तु आत्मा से दूर होने पर दुखों का क्रम प्रारंभ हो जाता है। पर्युषण पर्व सभी में चेतना जागृत करने वाला पर्व है, जो हमें बाहरी जगत से भीतरी जगत की ओर ले जाने वाला पर्व है, जो आध्यात्मिक साधना की प्रेरणा देता है।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने खाद्य संयम दिवस पर अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने चिंतन प्रदान किया कि सामायिक दिवस के स्थान पर खाद्य संयम दिवस से पर्युषण का प्रारंभ करना चाहिए, क्योंकि खाद्य संयम हमारी साधना की पृष्ठभूमि है। खाद्य संयम होने की स्थिति में ही हम स्वाध्याय, ध्यान, मौन कर सकते हैं। गहरा चिंतन कर सकते हैं और नए चिंतन की स्फुरणा भी कर सकते हैं, इसीलिए खाद्य संयम का महत्त्व है।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने प्रज्ञापुरुष जयाचार्य पर अपनी विचाराभिव्यक्ति देते हुए कहा कि परमपूज्य जयाचार्य के जीवन में तीन बातों का योग था - आशीर्वाद, दूरदृष्टि और शक्ति संपन्नता। इसी के संयोग से वे एक सफल आचार्य बने। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

स्वाध्याय से बड़ा गुरु नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
21 अगस्त, 2025

महावीर के महापथिक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पर्युषण पर्व के द्वितीय दिवस आर्हत् वाङ्मय पर आधारित अपनी मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में आत्मवाद एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है, जहां आत्मा को शाश्वत माना गया है। हर प्राणी की आत्मा, सिद्ध भगवान सहित, अतीत में थी, वर्तमान में है और हमेशा बनी रहेगी। कभी भी आत्मा का विनाश नहीं होता है।

आत्मवाद के सिद्धांत से ही जुड़ा हुआ दूसरा सिद्धांत है कर्मवाद। सिद्धों के सिवाय जो आत्माएं हैं, वे सकर्म होती हैं। सिद्धों की आत्माएं कर्ममुक्त होती हैं, विशुद्ध होती हैं, जबकि संसारी आत्माएं, यहां तक कि चौदहवें गुणस्थान तक के जीवों की आत्माएं भी सकर्मा होती हैं। जैनिज्म का एक तीसरा सिद्धांत है लोकवाद। लोक वह है जहां छः द्रव्य उपलब्ध होते हैं।

इन तीन सिद्धांतों के अलावा यदि आत्मा और कर्म है तो एक सिद्धांत पुनर्जन्मवाद बन जाता है, जिससे स्वर्ग-नरक जैसी चीजें जुड़ी हुई हैं। पर्युषण पर्व के दौरान हम परम आराध्य, परम वंदनीय भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का भी वर्णन करते हैं। प्रभु की आत्मा ने अनंत-अनंत जीवन-मरण किए थे। भगवान महावीर की आत्मा ने जिस भव में सम्यक्त्व प्राप्त किया, वहां से सत्ताईस भवों का वर्णन किया जाता है।

जैन भूगोल के अनुसार भरत क्षेत्र, ऐरावत क्षेत्र और महाविदेह क्षेत्र हैं। महाविदेह क्षेत्र में अभी भी तीर्थंकर विद्यमान हैं। कोई ऐसा समय नहीं आता जब महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर विद्यमान न हों। महाविदेह में कम से कम 20 तीर्थंकर तो रहते ही हैं और अधिकतम 160 तीर्थंकर हो सकते हैं। उसी समय 5 भरत और 5 ऐरावत में भी यदि तीर्थंकर हों तो एक समय में 170 तीर्थंकर हो सकते हैं।

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के अंतर्गत पूज्य श्री ने नयसार भव का सुन्दर विवेचन किया।

पर्युषण पर्व के द्वितीय दिवस स्वाध्याय दिवस पर प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने कहा कि स्वाध्याय हमारे लिए खुराक है। अतः जितना संभव हो सके, नियमित रूप से स्वाध्याय करने का प्रयास करना चाहिए।

वर्तमान में अनेक आगम उपलब्ध हैं, उनका नियमित रूप से स्वाध्याय होना चाहिए। स्वाध्याय करने से शुभ योगों का प्रवर्तन हो सकता है, मार्गदर्शन मिल सकता है। कंठस्थ ज्ञान का पुनरावर्तन भी करते रहना चाहिए। मानव जीवन मिला है तो स्वाध्याय करते रहने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीवर्याजी ने क्षांति धर्म पर गीत के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति दी। मुख्यमुनि प्रवर ने क्षांति, मुक्ति आदि दस धर्मों की विवेचना प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि क्षमा हमारी आत्मा का स्वभाव है। क्रोध आदि की अनुपलब्धता से आत्मा की जो स्थिति बनती है, उसे धर्म कहा जाता है। क्रोध आत्मा का विभाव है जो अनादि-अनंत काल से हमारे साथ चल रहा है। क्रोध हमारे विवेक को समाप्त कर देता है। उत्तम क्षमा की स्थिति तभी बनती है जब व्यक्ति निमित्तों की प्रतिकूलता में भी क्रोधित न हो। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने स्वाध्याय दिवस पर उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि जीवन में ज्ञान हमारा पथप्रदर्शक होता है। जो व्यक्ति स्वाध्याय में तत्पर रहता है, वह व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करता है। स्वाध्याय आंतरिक तपस्या का एक प्रकार है। हम पुस्तकों का स्वाध्याय करें और स्वाध्याय करके ज्ञानामृत का पान करें। साध्वी मैत्रीयशाजी व साध्वी ख्यातयशाजी ने स्वाध्याय दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।